ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 अंक- 15 नवम्बर -I (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 10.00

व्यापार एवं उद्योग के लिए नेशनल कॉन्फ्रेंस एवं मेडिटेशन रिट्रीट

व्यवहार में अध्यात्म को नज़रअंदाज़ करने से बढ़ते हैं कष्ट

ज्ञानसरोवर। ब्रह्माकुमारीज़ के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय सम्मेलन में उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए मुम्बई से आए प्रख्यात

हृदयारोग विशेषज्ञ डॉ. विवेक मोहन ने कहा कि अध्यात्म के महत्व को नज़रअंदाज़ करने से जीवन में कष्टप्रद परिस्थितियों से गुज़रने को मजबूर होना पड़ता है। भौतिक सुखों के साधन बढ़ रहे हैं लेकिन जीवन मूल्य अपेक्षाकृत कम हो रहे हैं। झूठ, कपट, पाप के वातावरण को बदलने के लिए जीवन में सत्यता और पवित्रता की धारणा करने की प्रेरणा को किसी भी हालत में किनारे नहीं करना चाहिए।

मुंबई कैमिकल एंड शिपिंग के सी.ई.ओ.,एम.डी. रूचिर पारिख ने कहा कि विकटतम परिस्थितियों में शाश्वत सत्य को सामने रखते हुए स्वयं को अध्यात्म से जोड़ना

आवश्यक हो गया है। अध्यात्म एकमात्र ऐसा मार्ग है जो हर परिस्थिति में स्वयं को सम्बल देने में सक्षम है। वर्तमान परिवेश के प्रतिस्पर्धात्मक युग के व्यापारिक क्षेत्र में सफलता अर्जित करने के लिए सिद्धांतों के अनुसार निर्धारित लक्ष्य को सामने रखकर किया गया कार्य फलीभूत होता है। कैसी भी चुनौतियों में वो हमें अपनी मंज़िल की ओर बढ़ने की शक्ति प्रदान करता है और जीवन सुकून भरा बना रहता है।

प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. योगिनी ने कहा कि सत्य धर्म को सबसे बड़ा धर्म मानते हुए स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के अभियान में मनसा-वाचा-कर्मणा अपना अमूल्य योगदान देना चाहिए। समूचे विश्व में भारत की विविधता में एकता की परिपाटी की मिसाल अपने आप में अहम है।

जयपुर से आए प्रसिद्ध उद्योगपति एम.एल. शर्मा ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संगठन द्वारा दिया जा रहा प्रेम व सद्भाव का संदेश जीवन में धारण कर उसे व्यवहार में लाने से व्यापारिक क्षेत्र की हर चुनौती का सामना करना सुगम हो जाता है। इस तरह के कार्यक्रम से व्यवसाइयों व उद्योगपतियों को व्यापारिक क्षेत्र में सफल होने के सूत्र अवश्य

कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. सुरेन्द्र, एम.एल. शर्मा, डॉ. विवेक मोहन, ब्र.कु. योगिनी बहन, रूचिर पारिख, ब्र.कु. गीता बहन तथा ब्र.कु. मोहन।

मिलेंगे। जिससे देश भर से आए प्रतिनिधियों को अपने जीवन में परिवर्तन लाने की भी प्रेरणा मिलेगी।

प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्र.कु. गीता ने कहा कि संसार को सकारात्मक दिशा देने में व्यापारियों व उद्योगपतियों का बहुमूल्य योगदान होना चाहिए। अध्यात्म के सिद्धांतों को बारीकी से समझकर अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने में प्राथमिकता देनी चाहिए। मुम्बई से आए मोहन भाई पटेल ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान से हर परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति एवं आदर्श जीवन जीने की कला सीखने को मिलती है। मुम्बई से आए ब्र.कु. हरीश, ब्र.कु. नम्रता, ब्र.कु. अमृता आदि ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के मध्य में सभी को राजयोग मेडिटेशन की गहन अनुभूति भी कराई गई।

नयी पीढ़ी को संस्कारित बनाने के लिए शिक्षा में मूल्यों का समावेश

शिक्षाविदों के सम्मेलन में जुटे भारत तथा नेपाल से हज़ारों शिक्षाविद

शांतिवन। जिस देश की शिक्षा उत्कृष्ट नहीं है वहाँ का समाज उत्कृष्ट नहीं बन सकता। प्राचीन काल से भारतीय शिक्षा दुनिया भर में अच्छे संस्कारों के लिए जानी जाती है। नयी पीढ़ी को संस्कारवान बनाना है तो शिक्षा में नैतिक मूल्यों को जोड़ना होगा। उक्त विचार राजस्थान सरकार के श्रम, कौशल एवं नियोजन मंत्री जसवंत सिंह यादव ने व्यक्त किये। वे ब्रह्माकुमारी संस्था के शांतिवन में आयोजित शिक्षाविदों के सम्मेलन में उपस्थित लोगों को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि भारत देश संस्कारों का देश कहा जाता है। यहाँ की पारिवारिक संरचना हमेशा अन्य देशों की तुलना में सुदृढ़ रही है। परन्तु वर्तमान समय मूल्यों जो गिरावट आयी है वह वाकई चिंताजनक है। इसके लिए ब्रह्माकुमारीज़ का शिक्षा प्रभाग जिस तरह से बच्चों के लिए कार्य कर रहा है, ऐसे प्रायोजन पूरे देशभर में युवाओं के लिए करने की ज़रूरत है। यहाँ के लोगों का मूल्यनिष्ठ जीवन इसका सशक्त उदाहरण है।

संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि परमात्मा की जो शिक्षा मनुष्यों के लिए है वह सबसे अच्छी और श्रेष्ठ है। इसे जीवन में धारण करने के लिए सिर्फ खुद को और ईश्वर को सही अर्थों में जानने की ज़रूरत है।

प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि हमारा प्रयास है कि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा मिले और लोग अपना जीवन श्रेष्ठ बना सकें।

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो. डॉ. अनिल सहस्त्रबुधे ने कहा कि आजकल के युवाओं को सही रास्ते पर ले जाने के लिए जीवन में अच्छे गुणों का होना ज़रूरी है। इससे ही हम सही और सभ्य समाज बना सकेंगे।

कार्यक्रम में प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक डॉ हरीश शुक्ला, प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु. मृत्युंजय ने भी अपनी शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए स्कूलों में शिक्षा के साथ साथ मूल्यों के समावेश के बारे में भी सोचने की अत्यन्त आवश्यकता है।

इस अवसर पर शिक्षा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक डॉ आर.पी. गुप्ता, शिक्षा एवं मूल्य पाठ्यक्रम के निदेशक ब्र.कु. पांड्यामणि, ब्र.कु. सुमन समेत कई लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये।

शिक्षाविदों की विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी। साथ हैं राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर, राज्यमंत्री जसवंत सिंह यादव, प्रो. डॉ. अनिल सहस्त्रबुधे, राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय तथा डॉ. हरीश शुक्ला।

मन का दमन नहीं....सुमन बनायें

आधुनिक जीवनशैली ने मानव को उसके बाह्य जगत में डुबो दिया है और उसके अंतर्जगत को भुला दिया है। भारतीय परंपरा में इंद्रियों के उपयोग के बारे में गहन चिंतन किया गया है। लेकिन आज फास्ट फूड के कारण स्वादेन्द्रिय बहक गई है और कर्मेन्द्रिय मोबाइल तथा दूसरी अन्य टेक्नोलॉजी के कारण दुनिया भर के कोलाहल से भर गई है। उसके पीछे व्यक्ति के मन में निरंतर चलित होती कामना है। उसी के संदर्भ में स्वामी शिवानंद जी ने 'दिव्योपदेश' में कहा है कि: 'कामना का दूसरा नाम है दरिद्रता, अपूर्णता इतनी ही नहीं, लेकिन मृत्यु भी।' ऐसी कामनायें मनुष्य के भीतर के मानव को मार डालती हैं। इच्छाओं का वृत्त मानव के इर्द-गिर्द घूमता रहता है और अंत में उसे उसके जीवन में ख्याल भी नहीं आता कि फास्ट फूड के बदले सात्विक खुराक से आरोग्यता की स्वस्थता के साथ साथ मानसिक स्वस्थता भी मिलती है। उसे उसकी कल्पना भी नहीं होती कि ये जीभ रस से निकलता सुधार रस अमृत समान है, उस रीति से वो कभी विचार भी नहीं करता। मोबाइल की आवाज़ से ग्रसित ऐसी मेरी कर्मेन्द्रिय के कार्य को मैं बदल डालूँ तो भीतर का अनहद नाद भी मुझे सुनाई पड़े। इसका अर्थ यही है कि जहाँ शब्द नहीं वहाँ शांति है, जहाँ कोलाहल नहीं वहाँ निरवता है। ऐसे नाद की झंकार कान सुनने लगते हैं और उसे ही हम नाद ब्रह्म कहते हैं।

- ब्र.कु. गंगाधर

स्पर्श इंद्रियों के प्रमाण को खोजने की कोई आवश्यकता नहीं। स्पर्श से प्राप्त होते ज़्यादा से ज़्यादा देह के सुख के पीछे मानव दौड़ रहा है। टेलीविज़न जैसे माध्यम भी स्पर्श तृप्ति से होते आनंद के दृश्य दिखाते हैं, लेकिन वो भीतर की चेतना का स्पर्श भाग्य से ही करा सकते हैं। मनुष्य अंतरात्मा का आलिंगन करने के बारे में विचार भी नहीं करता। बाह्य स्पर्श से जैसे सुख है, ऐसे ही चेतना के स्पर्श में आनंद की अनुभूति है। हम सच्ची सुगंध को भूल गये, और परफ्यूम से खुद को नहीं, लेकिन दूसरों के द्वारा मिलती सुगंध के पीछे दौड़ रहे हैं। ऐसे हमारी पाँचों इंद्रियाँ और छठा मन की इच्छाओं से स्वयं को दौड़ाते हैं। बौद्ध धर्म में एक पुस्तक 'वितिच्छ जातक' में कहा है : 'इच्छा की गति अनंत है, जो वितिच्छा है, उसे हम नमस्कार करते हैं।

इसका कारण देते हुए एक अन्य बौद्ध ग्रंथ 'संयुक्त निकाय' में कहा है कि : 'इच्छा से पाप होता है, इच्छा से दु:ख होता है। इच्छाओं को दूर करें तो पाप दूर हो जाते हैं, और पाप दूर होते ही दु:ख दूर हो जाते हैं।' इच्छा के बारे में बौद्ध ग्रंथ में गहन चर्चा मिलती है। इच्छा का अस्त हो जाता है तो दु:ख समाप्त हो जाता है। ऐसा ग्रन्थों में कहा गया है। इच्छा के बारे में कृष्णमूर्ति जैसे महान चिंतक कहते हैं : 'कुछ पाने की इच्छा, ये हकीकत में वर्तमान की निष्क्रियता है।'

ऐसी इच्छा के बारे में ऐसा भी कहा गया है कि जो स्वर्ग की उपासना करते हैं उसे भी ब्रह्म का उपासक नहीं कह सकते। एक तो झूठी इच्छा, और उसमें फिर उत्तेजना भी मिल जाये, उत्तेजना यानि कि, ये जलती हुई अग्नि में घी डालने का काम करती है। ये उत्तेजना व्यक्ति को सतत् बाहर ले जाती है। मन में जितनी उत्तेजना बढ़ती है, उतना ही इंद्रियों को उल्टे रास्ते पर ले जाने की घटना भी बढ़ जाती है। मन में थोड़ा सा गुस्सा आता है, और तुरंत ही थोड़ी ही देर में आँखें लाल हो जाती हैं और जीभ बेलगाम बोलने लगती है। गुस्सा एक ऐसी आग है जो आसपास के सभी को भस्मीभूत कर देती है।

यहाँ उत्तेजना के स्वरूप को समझने जैसा है। जितनी उत्तेजना तीव्र, उतनी विवेक शक्ति मंद और अनिष्टता का ज़्यादा प्रागट्य। ये उत्तेजना ऐसी है कि और कोई भी बात उसे पसंद ही नहीं पड़ती। समय बीतते रोज़ नये नये मांग करती है। इच्छा, जैसे कि भोजन में एक अति स्वादिष्ट मिठाई खाने वाला थोड़े समय के बाद उसे छोड़कर दूसरी मिठाई मांगता है। काम भोग में डूबा हुआ मानव उसकी भोगतृप्ति के लिए नई नई बातों की इच्छा करता है। ऐसे भी कर्मेन्द्रिय के द्वारा पहले अच्छे संगीत सुनने की इच्छा रखेगा, फिर ईयर फोन लगाकर सारी दुनिया का संगीत सुनता रहेगा।

इच्छा की उत्तेजना को संतोषने के लिए नये नये चीज़ या वस्तुओं की आवश्यकता पड़ेगी, और इसीलिए ही मानव उत्तेजना को पुष्ट करने के लिए आनंद की शोध में लग जायेगा। इच्छा की उत्तेजना में ही उसे जीवन का परम सुख लगेगा और फिर निरंतर वो उत्तेजनाओं को नये नये रूप से संतुष्ट करने के लिए दौड़ता रहेगा। ये उत्तेजना उसे ज़्यादा से ज़्यादा पतन की तरफ धकेल देगी। इस जागृत होती उत्तेजना को जानना पड़ेगा और फिर उसका निवारण करना ही होगा। ऐसा नहीं मानना कि उत्तेजना दूर होगी तो इंद्रियाँ- शेष पेज 7 पर...

ज्ञान योग धारणा पर अटेन्शन से सेवा नैचुरल होती है

हरेक यहाँ बाबा के घर में, बाबा की याद में बैठे हैं। बाबा ऑटोमेटिक याद करके हमारी याद को खींच रहा है। हम सभी इस बात के अनुभवी हैं ना। हम बाबा को याद नहीं करते हैं, पर याद की भी खींच होती है। जैसे अभी यहाँ बैठते, संगठित रूप में साइलेंस में रहना सहज है, ऐसे कामकाज करते भी यही अटेन्शन हो, क्योंकि काम किसका है! यज्ञ का। सेवा चौथा सबजेक्ट है। ज्ञान क्या है? मैं कौन, मेरा कौन? ज्ञान, योग और धारणा तीनों ही हमारी लाइफ को चलाने वाली हैं। हमको बाबा ने सिखाया है, हमारा काम है दिल कहता है औरों को भी पता चले। यहाँ मैं देख रही हूँ, इतनी सारी विश्व भर में सेवायें हो गयी हैं। सेवा क्या है? बाप की याद में रहना, बाप समान बनना। इसके लिए संगमयुग का समय बहुत अच्छा है, इस समय ही हम विश्व का कल्याण करने के निमित्त हैं।

शिवबाबा, ब्रह्माबाबा सबकी पहचान अभी आयी है। यह सब मेरे बहन भाई हैं। लौकिक बहन भाई लौकिक हैं, आयेंगे, देखेंगे। यह पक्का हो गया है कि यह लौकिक हैं।

तीनों लोकों का, तीनों कालों का ज्ञान बाबा ने ऐसा दिया है। उसपर मनन चिंतन करो तो कितना वण्डरफुल है। ज्ञान की गहराई में जाओ, फिर योग क्या है उसकी गहराई में जाओ। ज्ञान, योग, धारणा अच्छी है तो सेवा नैचुरल होती है, ईज़ी है ना। सिर्फ टाइम व्यर्थ करने की आदत न हो। मैं देखती हूँ टाइम सफल हो रहा है, यह बहुत ही अच्छा है। इससे सब ईज़ी हो जाता है। हठयोग बड़ा मुश्किल है, सहजयोग माना बाबा से कनेक्शन। फिर न्यारे रहने से बाबा का प्यार खींचते हैं तो धारणा अच्छी हो जाती है। तो साधारण व्यर्थ समय समाप्त होके समय सफल होता है।

जो समय व्यर्थ करता है, भले उसको ख्याल नहीं है पर हमको तरस पड़ता है। ज्ञान, योग, धारणा तीनों में समय एक्यूरेट सफल हो। सिम्पल है, सिर्फ अभी हमको औरों को सुनाने का, आप समान बनाने का शौक होना चाहिए। तो इससे कदर बढ़ता है, यह बहुत अच्छी शिक्षा है।

पहले जब ज्ञान मिलता है तो तन मन धन मेरा नहीं है। है भी तो सब सेवा के लिए है, क्योंकि अब यह सब मेरा नहीं है इसलिए यह मन माना संकल्प, वाणी यानी बोल और कर्म सब सेवा के लिए है। अभी समय, संकल्प और श्वांस सेवा में ही सफल हो। यह संगठन में रिवाइज़ होता है, नैचुरल होता है, एक्यूरेट होता है। अभी जैसे श्वांस चलता है, संकल्प आते हैं पर फायदे के लिए हैं, वैसे ही नहीं हैं। इस तरह से अगर समय सफल हो रहा है, तो लगता है कि यह राजयोग कितना ईज़ी है, नैचुरल है। देखो, हमारे दोनों हाथ खाली हैं ना, कुछ भी नहीं है।

दादी जानकी,मुख्य प्रशासिका

मैं जब लण्डन आई थी, तो एक छोटी सी बैग लेके आई थी। मैंने आज सब जगह चक्कर लगाया, सब देखा कि कौन कहाँ और कैसे बैठे हैं, अपनी-अपनी सेवा की ड्युटी पर निमित्त बनके, इसलिए बता रहे हैं। लेकिन मुझे किसी का नाम याद नहीं आता है। अभी यह ध्यान रहे कि हम सभी आत्मायें जो बाबा को पहचानते हैं, उनको क्या करने का है? यही प्रैक्टिकल लाइफ में ला करके भगवान के भी सामने आओ, तो अपने आप अंदर से बाबा निकलता है।

बाबा का जो भी कार्य है, वो अभी पूरा सम्पन्न हो गया है और होना ही है, वो यही समय है। परन्तु वण्डर है, यह जब शुरू हुआ था तो कितने लोग थे, अभी हज़ारों लाखों हैं, जगते हैं, जगाते हैं, एक एक वैल्यूबुल हैं। सब एक हैं, एक के हैं, और एक ही रास्ता है ऊपर जाने का तो अभी चलो साइलेंस में...।

भयभीत नहीं, त्रिकालदर्शी की सीट पर सेट हो जाओ

दादी हृदयमोहिनी,
अति. मुख्य प्रशासिका

बाबा ने हमें त्रिकालदर्शी बनाया है इसलिए किसी भी दृश्य को देखते हमें भय नहीं हो सकता। वर्तमान में कोई रो रहा है, कोई चिल्ला रहा है, कोई मर रहा है, कोई भूख में तड़प रहा है या अर्थ क्वेक हो रही है या कुछ भी हो रहा है, लेकिन हम सिर्फ उस वर्तमान नज़ारे को नहीं देखते हैं। हम इस वर्तमान में भविष्य क्या छिपा हुआ है उसे जानते हैं। हमें तीनों ही कालों की नॉलेज है। नॉलेज को कहते ही हैं –नॉलेज इज़ लाइट, नॉलेज इज़ माइट, तो नॉलेज की लाइट होने के कारण हम तीनों कालों को देखते हैं, सोचते हैं और फिर माइट होने के कारण हमको कोई दु:ख की फीलिंग नहीं आती। क्योंकि जहाँ नॉलेज की लाइट और माइट है वहाँ भय हो ही नहीं सकता। दु:ख वा कमज़ोरी आ नहीं सकती। नहीं तो कभी भी ऐसा कोई दृश्य देखते हैं तो या तो घबरा जाते हैं या भय में कुछ अपना होश नहीं रहता, अनकॉन्शिय हो जाते हैं, योग-ज्ञान सब भूल जाते हैं, लेकिन हमें ज्ञान-योग भूल नहीं सकता, क्योंकि हमने ही तो कहा है कि हमारा राज्य आने वाला है और हम बापदादा के साथ पुरानी सृष्टि के विनाश और नई सृष्टि की स्थापना के निमित्त हैं। जब नया मकान हमको बनाना है तो पुराने का ज़रूर विनाश करना होगा। पुराने के बीच में नया तो नहीं बनायेंगे ना। तो हम लोगों को यह पता है कि यह विनाश तो होना ही है, 'नथिंग न्यू'। हमको भयभीत होने की कोई बात नहीं। यह कल्याणकारी विनाश है।

तो विनाश देखने के लिए त्रिकालदर्शी स्थिति के तख्त पर बैठना है। अगर त्रिकालदर्शी स्थिति नहीं होगी तो भयभीत होंगे, घबरायेंगे। दूसरी बात – यह विनाश कोई साधारण विनाश नहीं है, यह विनाश बहुत कल्याणकारी है। अब कहेंगे नाम विनाश है, सबकी मृत्यु होगी फिर कल्याणकारी कैसे हो सकता है? मृत्यु तो खराब चीज़ होती है! लेकिन यह विनाश क्यों कल्याणकारी है? क्योंकि मेजॉरिटी आत्मायें चाहती हैं कि हम इस चक्कर से छूटें, हमको तो मोक्ष चाहिए। तो इस विनाश के बाद हमें तो जीवनमुक्ति मिलेगी, लेकिन दूसरी आत्मायें परमधाम में जाकर रेस्ट करेंगी, दूसरी आत्माओं की जो शुभ इच्छा है, चक्र से निकलना चाहते हैं, रेस्ट में रहना चाहते हैं, वह तो इस विनाश के बाद ही पूरी होगी। हम लोगों के लिए कल्याणकारी इसलिए है, कि हमको जीवनमुक्ति का वर्सा मिल जायेगा। स्वर्ग का फाटक यही विनाश खोलेगा। विनाश दरवा. जा है। जब विनाश होगा, पुरानी दुनिया खत्म होगी, सभी आत्माओं की जनसंख्या कम हो जायेगी, परमधाम में जाकर बैठेंगी, तब हम राज्य करेंगे। तो विनाश में दो कल्याण हैं – हमारे लिए स्वर्ग के गेट खुलेंगे, दूसरों को मुक्ति मिलेगी। इसीलिए यह नॉलेज होने के कारण ही हम घबराते वा भयभीत नहीं होते हैं। हम लोग योग करते हैं तो मन्सा से केवल व्यक्तियों के परिवर्तन का लक्ष्य नहीं रखते, बल्कि प्रकृति के पांच तत्वों के परिवर्तन का लक्ष्य भी होता है। हम योग से तत्वों को भी चेंज कर रहे हैं, सतोगुणी बना रहे हैं क्योंकि जब तमोगुण खत्म होगा तब सतोगुण स्वत: ही आयेगा। लेकिन तमोगुणी आत्माओं की जो इतनी संख्या है, वह सब सतोगुणी बनकर सतयुग में तो नहीं आयेगी। इसलिए इन आत्माओं को मुक्तिधाम जाना है। यह नॉलेज स्मृति में रखने से ही त्रिकालदर्शी स्थिति की अवस्था बहुत अच्छी रहेगी। तो इस प्वॉइंट को पक्का करो, तैयारी करो। कोई भी चीज़ देखो तो अब से ही त्रिकालदर्शी होकर देखो। चाहे अच्छी हो या बुरी, लेकिन उसको भी त्रिकालदर्शी होकर देखो। तो त्रिकालदर्शी स्थिति शक्तिशाली स्थिति है, उसमें कभी हलचल नहीं होगी – यह क्यों हो रहा है, यह कैसे हो रहा है, ऐसे नहीं होना चाहिये, ऐसे होना चाहिए। तो 'कैसे' और 'ऐसे' नहीं होगा। बाबा ने ड्रामा का ज्ञान बहुत अच्छी तरह से दे दिया है। लेकिन आत्मा और परमात्मा के ज्ञान के साथ-साथ प्रैक्टिकल जीवन के लिए ड्रामा का ज्ञान भी ज़रूरी है। इसीलिये कुछ भी होता है तो बाबा कहता है – वाह ड्रामा वाह! हाय, यह क्यों हुआ, हाय, यह कैसे हुआ – यह नहीं कहो। कोई बात उल्टी होती है तो भी उसमें हमारा कल्याण समाया हुआ है। लेकिन त्रिकालदर्शी होकर नहीं देखते हैं तो फिर थोड़ी-थोड़ी हाय होती है । मन के संकल्पों में भी हलचल हुई तो हाय-हाय हुई ना। इसीलिए ड्रामा का ज्ञान भी बहुत ज़रूरी है।

देखने वाली आँखें...!

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र

आमतौर पर कइयों के मुख से सुनने में आता है कि दृष्टि चंचल होती है, दृष्टि खराब होती है, इसपर हमें समझने की ज़रूरत है कि कैसे ये मैकेनिज़म काम करता है। कई बार हम कहते हैं कि दृष्टि हमें धोखा देती है और क्रिमिनल आई हो जाती है। दृष्टि पवित्र होने के बदले अपवित्र हो जाती है। हमें यह सोचने की ज़रूरत है कि हमारी ये दृष्टि या हमारी ये आँखें स्वयं में न खराब हैं, न अच्छी हैं, ये तो साधन है।

हमारी अच्छी दृष्टि या बुरी दृष्टि हमारे दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। हमारी मंसा पर निर्भर करती है। दृष्टि का आधार है दृष्टिकोण। अगर हम दृष्टिकोण का परिवर्तन नहीं करेंगे तो दृष्टि भी परिवर्तित नहीं होगी। आँखें तो देखने का एक माध्यम है, जैसे कैमरे में लेन्स होता है। मन की जो वृत्ति है, वो आधारित है हमारे दृष्टिकोण पर, क्योंकि वृत्ति बनती ही है दृष्टिकोण से। हमारा दृष्टिकोण 'आउट लुक' पर निर्भर है। हमारा 'इन लुक' अंतर्दृष्टि पर निर्भर है। अर्थात् हमारे मन में क्या भरा हुआ है उस पर। क्या हम आशावादी हैं या निराशावादी हैं? सकारात्मक सोचते हैं या नकारात्मक सोचते हैं? यह जो हमारी सोचने की विधि या प्रक्रिया है, उसे ही दृष्टिकोण कहा जाता है। इस पर दृष्टि निर्भर करती है। आप जितना भी सुन लिजिए, जितनी भी कोशिश कीजिए, आपकी दृष्टि तब तक ठीक नहीं होगी, जब तक आपका दृष्टिकोण ठीक नहीं होगा। आप देखते होंगे, पहले के ज़माने में कभी लोग सुंदर चेहरे के लिए चाँद का मिसाल दिया करते थे। अपनी प्रियतमा के लिए कहते थे कि उसका मुखरा चाँद जैसा सुंदर है। अब वे ऐसा क्यों कहते थे? अब जब मनुष्य चाँद पर जाकर उतरा, उसने देखा कि वहाँ तो बहुत गड्ढे हैं, रेत ही रेत है। अब चाँद के बारे में जिसने इस बात को जाना, तो वो यही समझेगा कि कवि, नारी की महिमा करने के बदले उसका अपमान कर रहा है, क्योंकि चाँद में तो गड्ढे हैं, खराबी है। यह खराबी हमें दूर से दिखाई नहीं देती। वहाँ से जो फोटो लेकर आये हैं, उनको आप देखेंगे तो पता पड़ेगा कि चाँद तो भद्दी चीज़ है।

जिन्होंने जीवशास्त्र पढ़ा है, इंसान के चेहरे को माइक्रोस्कोप से देखा है, उन्हें पता है कि हमारे रोम, जिनसे पसीना निकलता है, वहाँ गड्ढे ही गड्ढे हैं। जिसको हम सुंदर चेहरा समझते हैं, वो किससे भरा होगा, वह किटाणुओं से भरा पड़ा है। शरीर के अंदर कीड़े, रोगाणु और गंदगी भरी पड़ी है। लेकिन यह तो चमड़ी रूपी अच्छे प्लास्टिक से ढ़का हुआ है इसलिए हमें आसानी से मालूम नहीं पड़ता। बाथरूम में जाते हैं, तो जो कुछ होता है वो तो शरीर में ही है। कचरेदान में जो कचरा डालते हैं, थूकदान में जो कुछ आप थूकते हैं, वो सब किसमें है? संसार की कौन सी गंदगी जो इसमें नहीं है? लेकिन यह सब कचरा, गंदगी, एक अच्छे से, रंगीन प्लास्टिक से ढ़का हुआ है। जिस व्यक्ति का दृष्टिकोण है कि यह शरीर बाहर से देखने में सुंदर है, लेकिन अंदर क्या है? क्या उसको शरीर के प्रति आकर्षण होगा, कभी नहीं। इसलिए दृष्टि तब तक नहीं बदलेगी, जब तक दृष्टिकोण नहीं बदलेगा।

जो कुछ भी हम बाहर से देखते हैं, वह संदेश के रूप में हमारे मन में आता है। छ: फुट के आदमी को हमने देखा, यह पुरुष है या स्त्री है, वह हमारे सामने आया। आँखें तो हमारी छोटी सी हैं, लेकिन आदमी छ: फुट का है।

फिर हमने उसको देखा कैसे? हमारे मस्तिष्क पर उसका बहुत छोटा सा प्रतिबिम्ब पड़ता है। उसका रंग क्या है, रूप क्या है, चेहरे का लक्षण क्या है, उसकी बनावट क्या है, उसकी आकृति प्रकृति कैसी है - यह चित्र चित्रित होता है। संदेश मस्तिष्क को पहुँचने के बाद आत्मा इन सबका विशलेषण करती है कि क्या है और क्या नहीं है। यह जो विशलेषण की अवस्था है, इसे हम विशलेषण की प्रक्रिया कहते हैं। जब तक यह परिवर्तित नहीं होगी, तब तक दृष्टि परिवर्तित नहीं हो सकती। बाहर से जो संदेश आया, उसको उद्दीपन(स्टीम्युलस) कहते हैं, यह पहुँचने के बाद वहाँ से प्रतिक्रिया आती है कि यह छ: फुट का मनुष्य है, पुरुष है या स्त्री है। यह फलाने जगह का रहने वाला है या वाली है। इसको मैंने कई साल पहले देखा था, इसका नाम यह है। उसको ये सारा रिकॉर्ड खोलकर चित्रित करता है। उस आदमी का नाम या सारा परिचय तो उसके चेहरे पर नहीं लिखा रहता, मन के अंदर या आत्मा के अदंर जो सारा रिकॉर्ड है, उसकी तुलना करके आत्मा उसको पहचानने की कोशिश करती है। अंदर की जो प्रतिक्रिया है, प्रत्युत्तर है, बाहर का जो उद्दीपन है, उसकी प्रतिक्रिया या प्रत्युत्तर है - वह कैसे बदले? यह प्रतिक्रिया किस पर निर्भर है? अंतर्दृष्टि (इन लुक) पर। जब तक मनुष्य की अंतर्दृष्टि नहीं बदलेगी, तब तक बाहर की दृष्टि नहीं बदलेगी।

अब वो बदलेगी कैसे? तो इसके लिए हमें सही सही चीज़, जो है, जैसी है, वैसे ही रूप का हमें सत्य ज्ञान होना ज़रूरी है और साथ साथ हमें निष्पक्ष होकर उसे उसी रूप से देखने का दृष्टिकोण बनाना पड़े। ये कैसे डेवलप किया जा सकता है? कोई, जो हमें सम्पूर्ण सत्य रूप से जानता हो, समझता हो, वही तो बता सकेगा। इसलिए कहा जाता है 'सत्यम शिवम सुंदरम'। वे ही अगर हमें बतायें कि ये कुदरत का खेल कैसे चलता है, वे हमें ज्ञान दें, हमें पढ़ायें, समझायें, सिखायें, तभी तो हमारी अंतरचेतना में वो सत्य चीज़ बढ़ेगी, अर्थात् वो समझ पैदा होगी, जिससे कि हमारे देखने का तरीका बदलेगा, अर्थात् हमारा दृष्टिकोण बदलेगा, हमारी मंसा बदलेगी, तब इन नेत्र रूपी लेन्स से जो हम हैं, वही तो देखेंगे, जैसे कम्प्युटर में प्रोग्राम डाला जाता है, और कम्प्युटर उसी प्रोग्राम के अनुसार चीज़ हमारे सामने लाता है। जब परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान बुद्धि में भरता जाता है, धारण होता जाता है, तब हमारा दृष्टिकोण बदलता है और तब ही दृष्टि भी बदलती है। क्योंकि दृष्टिकोण से पहला परिवर्तन होता है वृत्ति में, फिर वृत्ति से बदलती है स्मृति और स्थिति। इससे फिर हमारी दृष्टि जो है, वो स्वयं बदल जाती है। अगर हम चाहते हैं कि हम अखंड पवित्रता का पालना करें, पवित्रता रूपी जो श्रेष्ठ खज़ाना है, परमात्मा द्वारा दिया हुआ जो वरदान है, उसको किसी भी रीति से ना गंवायें, वो सदा बना रहे, इसके लिए हमारी दृष्टि ठीक रहे। तो सबसे पहले अपने सोचने की प्रक्रिया को ध्यान पूर्वक देखें, ऑब्ज़र्व करें कि यह कहीं मैंने सुना हुआ, पढ़ा हुआ या पुरानी मान्यताओं के आधार से ही तो मैं नहीं चल रहा हूँ, कहीं मैं इसी आधार पर तो नहीं सोच रहा हूँ! अब हमें ये तो मालूम हुआ है कि हम वास्तव में शरीर को चलाने वाली एक चैतन्य सत्ता आत्मा हैं। तो चैतन्य सत्ता जो है, जैसी है उसे जानें, और उसको जो मूलत: चाहिए वही सोच हमें पैदा करनी है। तो आज से हम इसपर विचार करेंगे और अपने सोचने की प्रक्रिया का आरंभ उस आत्मा को केन्द्रबिन्दु रख ही करें। आत्मा को चाहिए ही क्या? शांति, खुशी, आनंद, ज्ञान, शक्ति और पवित्रता। उसी के इर्द-गिर्द अपनी सोच प्रणाली का हम सृजन करेंगे या क्रियेट करेंगे तो हम अपने दृष्टिकोण को भी वास्तविकता के अनुरूप बना पायेंगे। जब हमारे दृष्टिकोण में वो चीज़ आयेगी, तब हमारी दृष्टि में भी परिवर्तन होगा।

दिल्ली। भारत के गृहमंत्री राजनाथ सिंह का गुलदस्ता भेंट कर सम्मान करते हुए ब्र.कु.राधा,लखनऊ, ब्र.कु. रोहित,गुज. तथा ब्र.कु. हुसैन,ओ.आर.सी.।

नेपाल। विजयदशमी एवं चैतन्य दुर्गा झाँकी के अनावरण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय रक्षामंत्री भिमसेनदास प्रधान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. राज बहन। साथ हैं ब्र.कु. रामसिंह।

हापुर-उ.प्र.। एडमिनिस्ट्रेटिव विंग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सांसद राजेन्द्र अग्रवाल, विधायक विजय पाल आधति, एस.डी.एम. डॉ. श्रीवास्तव, ब्र.कु. कमल, ब्र.कु. ज्योति तथा ब्र.कु. स्वर्णा।

दिल्ली-मेहरौली। 'सेल्फ गवर्नेन्स फॉर गुड गवर्नेन्स कैम्पेन' के कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए टीबी एण्ड रेस्पीरेट्री डिज़ीज़ हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. रोहित सरीन, सी.एम.ओ. डॉ. प्रवेश यादव, डॉ. एम.डी. गुप्ता, ब्र.कु. अनीता तथा अन्य।

गया-बिहार। 'तनाव मुक्ति योग शिविर' में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. शीला, समाजसेवी प्रदीप जैन, सीविल कोर्ट बार एसोसिएशन के प्रेसीडेंट ओम प्रकाश तथा ब्र.कु. लक्ष्मी।

दिल्ली-लाजपत-नगर। नवरात्रि के शुभ अवसर पर पूर्व काउन्सलर सुभाष मल्होत्रा तथा सहयोगियों को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. चंदर बहन।

सुन्नी-शिमला(हि.प्र.)। राज्यपाल महोदय आचार्य देवव्रत को सेवाकेन्द्र द्वारा नवनिर्मित भवन के उद्घाटन एवं चरित्र निर्माण आध्यात्मिक सम्मेलन में आने का निमंत्रण देने के पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शकुन्तला तथा ब्र.कु. रेवादास।

मुंगेर-बिहार। '12 दिवसीय अलविदा तनाव कार्यक्रम' का उद्घाटन करते हुए जिला मजिस्ट्रेट उदय कुमार सिंह, एस.पी. आशीष भारती, डी.डी.सी. रामेश्वर पाण्डेय, एम.एल.ए. विजय कुमार विजय, मेयर कुमकुम देवी, डिप्युटी मेयर बेबी चनकी, ब्र.कु. पूनम,वक्ता, ब्र.कु. रानी दीदी,ज़ोन इंचार्ज, ब्र.कु. मनीषा, ब्र.कु. संजय,मा.आबू व अन्य।

राँची। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् उपस्थित हैं चेम्बर ऑफ कॉमर्स के प्रेसीडेंट अनुप कुमार, ब्र.कु. किरण, डॉ. वी.के. चतुर्वेदी तथा डॉ. राजीव गुप्ता।

सिसवा बाज़ार-उ.प्र.। चैतन्य देवियों की झाँकी में घुघुली के चेयरमैन राजेश सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. मनोज बहन।

निलोखेड़ी-करनाल। एस.डी.एम.एन स्कूल के विद्यार्थियों को 'राजयोग द्वारा नशामुक्ति' विषय पर मार्गदर्शन देने के पश्चात् स्कूल की प्रिन्सीपल रेखा चौहान को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए डॉ. सचिन परब,मुम्बई तथा ब्र.कु. संगीता।

दरभंगा-बिहार। लहेरियासराय एवं दरभंगा द्वारा लक्ष्मेश्वर सिंह लाइब्रेरी में आयोजित त्रिदिवसीय चैतन्य देवियों की झाँकी का दृश्य ।

गलती करने पर बच्चों का हौसला बढ़ायें

गतांक से आगे...

प्रश्न:- अभी तो वो दर्द में हैं, इसका मतलब है कि उनको कुछ भी ठीक करने से पहले स्वयं को ठीक होना होगा, क्यों?

उत्तर:- मुझे ठीक होना चाहिए और उस परिस्थिति को एक परिस्थिति ही रहने दो, उसको एक विनियोग ही रहने दो, वो एक बिज़नेस डील ही ठीक है।

प्रश्न:- यहाँ पर ना वो 'गुस्सा' सही लगता है और मैंने कहा था कि ऐसा होता है और वो बार-बार और बहुत लोगों के साथ होता है।

उत्तर:- लेकिन घर में वो एक 'व्यक्तिगत कार्य सूची' बन जाता है और हम कहीं न कहीं उसको प्रयोग करते हैं। विशेषकर अगर हमसे छोटी सी गलती हो जाये और सामने वाला कुछ बोले तो हम उसकी सारी गलतियाँ पहले ही याद दिला देते हैं। यह तो जैसे कि एक कॉम्पीटिशन हो जाता है कि किसने ज़्यादा गलतियाँ की हैं और किसकी गलती ज़्यादा बड़ी है, आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था, आप क्या बात कर रहे हो, आपको कहने का क्या हक है, पहले आप अपने-आपको देखो कि आपने क्या किया है।

इससे हम कुछ सीख नहीं रहे हैं, इससे हमें कुछ सीखने को नहीं मिल रहा है। इससे हम एक-दूसरे को ऊपर नहीं उठा रहे हैं, हम दोनों ही एक-दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश कर रहे हैं, इसका परिणाम क्या निकलेगा? इससे तो और ही दोनों एक-दूसरे से दूर होते जायेंगे।

-ब्र.कु.शिवानी,जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

अगर घर में ऐसा कभी कुछ हो जाता है तो उनकी ज़िम्मेवारी है कि पूरे घर के वायुमंडल को और विशेषकर जिनसे वो गलती हुई है, ये बच्चे से भी हो सकती है, नम्बर उसके भी कम हो सकते हैं, कितनी सारी परिस्थितियाँ हैं तो तुरंत उसको कहें ठीक है अगली बार इससे अच्छा नम्बर लाना। लेकिन हम क्या करते हैं, उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने की बजाए और उसको तोड़ देते हैं।

हम जो यह सोचते हैं कि ये तो कुछ सीखते ही नहीं हैं, बार-बार यही गलती कर देते हैं। इन्होंने बार-बार यही वाली गलती करनी है। तो इससे हम क्या उसको सशक्त कर रहे हैं, नहीं, हम तो और ही उसको ऐसा करने के लिए बढ़ावा दे रहे हैं। गलती तो किसी से भी हो सकती है और वो प्रयास कर रहा है उससे बाहर निकलने के लिए, या फिर सामने वाला कहता है मुझसे गलती हो गई अब मैं इसे दुबारा नहीं करूंगा। हम इसे सहज ही स्वीकार कर लेते हैं।

प्रश्न:- नहीं, क्योंकि मैं बहुत ही मज़बूत दिल की हूँ?

उत्तर:- मेरा दिल मज़बूत है! सामने वाला कह रहा है 'आई ऐम सॉरी' मैं पूरी कोशिश करूंगा कि ये फिर से न हो। मैं अंदर ही अंदर सोचती हूँ कि अगर फिर से किया ना तो फिर....। सामने वाले ने कहा है कि मैं फिर से नहीं करूंगा, तो हमारे मन से कौनसी एनर्जी जानी चाहिए। येस, मैं विश्वास करता हूँ कि आप फिर से ऐसा नहीं करोगे। ये बोलने की चीज़ नहीं है, इसे अंदर से अनुभव करना है। ऊपर से तो हम शायद बोल देते हैं, लेकिन अंदर से हम उसको माफ नहीं कर पाते हैं। - क्रमश:

स्वास्थ्य — मखाना खायें, शुगर से फ्री होकर चैन की नींद सोयें

आप मखाने के चार दानों का सेवन करके शुगर से हमेशा के लिए निजात पा सकते हैं। इसके सेवन से शरीर में इंसुलिन बनने लगता है और शुगर की मात्रा कम हो जाती है। फिर धीरे-धीरे शुगर रोग भी खत्म हो जाता है।

सेवन की विधि

अगर आप जल्द से जल्द मधुमेह को खत्म करना चाहते हैं तो सुबह खाली पेट चार दाने मखाने खाएँ। इनका सेवन कुछ दिनों तक लगातार करें। इससे मधुमेह का रोग तेज़ी से खत्म होगा।

दिल के लिए फायदेमंद

मखाना केवल शुगर के मरीज के लिए ही नहीं बल्कि हार्ट अटैक जैसी गंभीर बीमारियों में भी फायदेमंद है। इनके सेवन से दिल स्वस्थ रहता है और पाचन क्रिया भी दुरूस्त रहती है।

तनाव कम

मखाने के सेवन से तनाव दूर होता है और अनिद्रा की समस्या भी दूर रहती है। रात को सोने से पहले दूध के साथ मखानों का सेवन करें।

जोड़ों का दर्द दूर

मखाने में कैल्शियम भरपूर मात्रा में होता है। इनका सेवन जोड़ों के दर्द, गठिया जैसे मरीजों के लिए काफी फायदेमंद साबित होता है।

पाचन में सुधार

मखाना एंटी-ऑक्सीडेंट से भरपूर होता है जो सभी आयु वर्ग के लोगों को आसानी से पच जाता है। इसके अलावा फूल मखाने में एस्ट्रीजन गुण भी होते हैं जिससे यह दस्त से राहत देता है और भूख में सुधार करने के लिए मददगार है।

किडनी को करता मज़बूत

फूल मखाने में मीठा बहुत कम होने के कारण यह स्प्लीन को डिटॉक्सीफाइ करता है। किडनी को मज़बूत बनाने और ब्लड को बेहतर रखने के लिए मखानों का नियमित सेवन करें। तालाब, झील, दलदली क्षेत्र के शांत पानी में उगने वाला मखाना पोषक तत्वों से भरपूर एक जलीय उत्पाद है।

हल्दवानी-उत्तराखण्ड। चार दिवसीय चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए नैनीताल हाई कोर्ट जज सर्वेश कुमार गुप्ता। साथ हैं ब्र.कु. वीणा, ब्र.कु. नीलम तथा अन्य।

मिरज़ापुर-उ.प्र.। हिन्दुस्तान दैनिक पत्र द्वारा डैफोडिल्स पब्लिक स्कूल में आयोजित सम्मान कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. बिन्दु को सम्मानित करने के बाद चित्र में उनके साथ विन्ध्याचल मण्डल आयुक्त मनोहर लाल, जनपद जिलाधिकारी विमल कुमार दूबे तथा पुलिस अधीक्षक आशीष तिवारी।

रसड़ा-बलिया-उ.प्र.। श्रीनाथ बाबा मठ पर लगे दशहरा मेले में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लगाई गई 'चरित्र निर्माण पथ प्रदर्शनी' का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए कोतवाल जगदीश चन्द्र यादव। साथ हैं ब्र.कु. उमा, ब्र.कु. जागृति, ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

क्या करुँ हवा पानी ऐसा है, उसे सम्भालना पड़ता है। हर किसी का मैं अपने ऊपर दबाव फील करता हूँ। इसका मतलब तो यही हो गया ना कि जिसके साथ मैं आज तक रहा हूँ, यदि उनके साथ ठीक से नहीं रहा तो मुश्किल होती है, जीना दूभर हो जाता है, यही सबका रोना है।

✷✷✷

आपको पता है, यह बातें हमसे या आपसे कौन कर रहा है? गुलाम बात कर रहा है। सभी आज प्रकृति के दास हैं। अर्थात् अपनी पुरानी नेचर के दास हैं, तथा बाहरी प्रकृति भी उसमें पूरी तरह से सहयोगी है। आज हम अपने परमात्मा से अलग हुए तो किसी के सम्पर्क में तो आयेंगे ना! किसके सम्पर्क में आये हम, प्रकृति के ना! अर्थात् हमारा स्वभाव संस्कार जो इस शरीर द्वारा हमने अंदर जोड़ा। आज इतनी गहराई से जुड़ गए कि निकलना मुश्किल होगा ही। क्योंकि आज सबकुछ कर्मेन्द्रियों के अधीन है। कुछ भी हम अपने हिसाब से नहीं कर सकते। इन्हीं कर्मेन्द्रियों से आप अच्छा कर्म कराना चाहो तो भी साधारण कर्म हो जाता है। और साधारण कर्म तो हम खुशी से कर लेते हैं, और श्रेष्ठ कर्म को हम दरकिनार कर देते हैं। चाहे कारण नेचर का हो या प्रकृति के आधार का हो या दुनिया के रस्म-रिवाज का हो, उसके आधार से ही कर्म हो रहा है। अर्थात् मैं इनके इतना अधीन हूँ कि ना चाहते हुए भी मुझे कर्म करना पड़ता है। अगर हम भगवान की संतान हैं तो आज भगवान हमें मास्टर का टाइटल देते हैं, कहते हैं कि तुम प्रकृति के अधीन कैसे हो

सकते हो! अगर किसी का मेरे ऊपर दबाव या प्रभाव है, माना मैं गुलाम हो गया। अगर मैंने आपस में मोह वश, लोभ वश कर्म किया तो फिर उस कर्म से खुशी नहीं होगी। आज इसीलिए मन खुशी अनुभव करना तो चाहता है, लेकिन कर नहीं पाता। हमको मन और बुद्धि से ऊपर उठना है, अर्थात् मन बुद्धि में प्रकृति से सम्बंधित ही बातें हैं, जो शरीर में दर्द है, शरीर के सम्बंधियों से तकलीफ है, शरीर से जुड़ी हुई वस्तुओं से तकलीफ है जो मन को कमज़ोर बनाये हुए हैं। अगर आज हम अच्छा संकल्प भी करते हैं तो इन्हीं सारी चीज़ों के लिए करते हैं। कभी हम ये नहीं सोचते कि हम ही इनको चलाने वाले हैं, ना कि चलने वाले हैं। मन बुद्धि को हमको ही तो जीतना पड़ेगा ना! इन बातों को बार बार याद दिलाकर गुलामी से छूटना पड़ेगा। अगर आप सबका अनुभव जाकर पूछो तो सभी के अनुभवों में जिन संकल्पों से दु:ख है वो सारी प्रकृति से सम्बंधित ही है, जो हमारी नेचर बिल्कुल भी नहीं है। क्योंकि हमारी नेचर में नाम, मान शान सम्मान जुड़ गया है, ना कि ये पहले से था। जिसको अपनी कदर होगी, आत्मा को शक्तिशाली बनाने का मन होगा, शक्तिशाली संकल्प सिर्फ और सिर्फ आत्मा की उन्नति के लिए होंगे, ऐसी आत्मायें या ऐसे लोग एक नया कदम उठा सकते हैं। हमें ये बातें समझ में इसलिए नहीं आ रही हैं आजकल, क्योंकि आजकल इतना ज़्यादा डिस्ट्रैक्शन है कि ना चाहते हुए भी हमें ये सारी चीज़ें करनी पड़ जाती हैं। तो समझो इन बातों को और गुलामी से निकलो।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-2 (2017-2018)

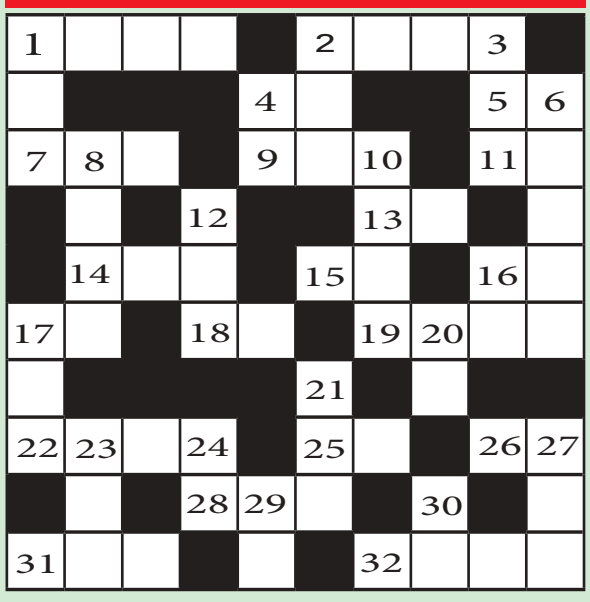

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. दैवी गुणों वाला, देव (3)
2. वरदाता....एक बाप ही है (3)
3. शिक्षा, सावधानी (3)
4. बदबू, दुर्गन्ध (2)
6. विनीत होने वाला, सम्मान में झुकना (5)
8. अवगुण, दुर्बलता (4)
10. प्रसिद्ध, नामचीन (4)
12. ओर, माया चमाट मार कर बच्चों का मुँह अपनी....मोड़ लेती है (3)
16. बहुमूल्य रत्न, जवाहर, नाग के मस्तक में रहने वाली (2)
17. कोमल, सुकुमार (3)
20. आत्मा की एक इन्द्रिय (2)
21. असन्तुष्ट, प्यासा (3)
23. केवल, सिर्फ (3)
24. बाप से सर्व सम्बन्धों का.... लेना है (2)
27. अवास्तविक बात, प्रवाहित करना (3)
29. जन्म और पालना देने वाली (2)
30. पानी, नीर (2)

बायें से दायें

1. शरीरधारी, जीवात्मा (4)
2. योग्यता, विशेष कला (4)
4. रुकावट, विघ्न (2)
5. समाना, खो जाना (2)
7. बल, योग से ही...आयेगी (3)
9. परेशान करना, तंग करना (3)
11. राय, विचार, श्रीमत में मन... मिक्स नहीं करना (2)
13. छिपा हुआ, लुप्त (2)
14. मज़ाकिया, हँसाने वाला (3)
15. मुर्दा, लाश (2)
16. मगन, खोये रहना (2)
17....तू कल्याणी बन, स्त्री (2)
18. परिणाम, किये हुए कर्म का.....अवश्य मिलता है (2)
19. मनोहर, मन को मोहने वाला सुन्दर स्थान (4)
22. ताकतहीन, लाचार (4)
25. इच्छा, कामना, प्यास (2)
26. किस समय (2)
28. खत्म, पूरा होना (3)
31. चाँदी, धवल (3)
32. फँसना, मूँझना (4)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।

भुवनेश्वर-ओडिशा। सेल्फ गवर्नमेंट डे के अवसर पर समाज की आध्यात्मिक एवं नैतिक क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए माननीय मुख्यमंत्री नवीन पटनायक से 'नगरबंधु अवॉर्ड' प्राप्त करते हुए ब्र.कु. तपस्विनी।

राँची-चौधरी बगान। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मेयर आशा लकड़ा, एम.टी.आई. कार्यकारी निदेशक कामाक्षी रामन, आर.डी. सिंह,रा.अ.,अ.पे.डी. एसोसिएशन, ब्र.कु.निर्मला तथा अन्य।

रूरा-उ.प्र.। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए एस.बी. आइ. बैंक मैनेजर रंजिता सिंह, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. प्रेम, ब्र.कु. प्रियंका, सी.डी. कॉलेज की पूर्व प्रिन्सीपल श्रीमति शकुन्तला तथा अन्य।

दिल्ली-मोहम्मदपुर। 'सेल्फ गवर्नेन्स फॉर गुड गवर्नेन्स कैम्पेन' के कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र.कु. प्रियंका, ब्र.कु. प्रो. स्वामीनाथन, न्यायाधीश पी.एस. नारायण, सदस्य,महादायी जल विवाद सभा तथा ब्र.कु. सतबीर।

दिगावा मंडी-हरि.। ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ पर प्रतिभावान छात्राओं के सम्मान समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए सिवनी के डी.एस.पी. विजय पाल, ब्लॉक समिति के चेयरमैन नंदलाल मतानी, खंड शिक्षा अधिकारी शक्ति पाल आर्य, ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. उर्मिला, ब्र.कु. शकुन्तला तथा ब्र.कु. रानी।

दिल्ली-पालम। स्वर्णिम सांस्कृतिक जागृति अभियान के अंतर्गत कला एवं संस्कृति प्रभाग द्वारा आयोजित सांस्कृतिक संध्या में मंचासीन हैं ब्र.कु. सतीश, ब्र.कु. दयाल, ब्र.कु. युगरत्न, ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य।

किन्नौर-हि.प्र.। आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए माननीय मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह। साथ हैं ब्र.कु. सरस्वती तथा अन्य।

बूंदी-राज.। अर्न्तराष्ट्रीय वृद्ध जन दिवस पर सुदामा सेवा संस्थान वृद्धाश्रम में 'परिवार व समाज में बुज़ुर्गों की भूमिका' विषयक संवाद कार्यक्रम में उपस्थित हैं पूर्व वित्त राज्यमंत्री हरिमोहन शर्मा, शहर काजी एवं कौमी एकता के अध्यक्ष अब्दुल शक्कुर कादरी, बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष अनिल शर्मा, गुरूद्वारा ग्रन्थी कर्पाल सिंह, दैनिक अंगद के प्रधान सम्पादक मदन मदिर, ब्र.कु. भारती तथा अन्य।

नारनौल-हरियाणा। यातायात एवं परिवहन प्रभाग की सेवाओं के बारे में चर्चा करने के उपरान्त समूह चित्र में स्टेशन मास्टर मुनेश भार्गव, स्टेशन अधीक्षक महेन्द्र कुमार, रिज़र्वेशन निरीक्षक आर.पी.यादव, प्रभाग संयोजक ब्र.कु. सुरेश शर्मा, ब्र.कु. सुनीता एवं ब्र.कु. मधु।

आस्का-ओडिशा। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् मंचासीन हैं काउन्सलर रवि पोल्लई, ब्र.कु. प्रवाती तथा अन्य।

हज़ारीबाग-झारखण्ड। चैतन्य दुर्गा झाँकी कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्राचार्य डॉ बालेश्वर राम, आई.एम.पी.एस के निदेशक प्रदीप कुमार, एस.एस.डब्ल्यू के निदेशक अरविंद कुमार व ब्र.कु. राजमति।

पठानकोट-पंजाब। ज्ञानचर्चा के पश्चात् एस.एस.पी. विवेक सोनी को ईश्वरीय वरदान कार्ड देते हुए ब्र.कु. सत्या, ब्र.कु. प्रताप तथा अन्य।

नवरात्रि में जलाया नवीनता का दीपक...?

- ब्र.कु. श्याम,माउण्ट आबू

अंक शास्त्र में 'नव' अंक के साथ जुड़ी हुई अनेक बाते हैं। नवरस, नवरंग, नवरतन, नवग्रह, ग्रहों की नौ अवस्थायें, नौधा भक्ति, नवनिधि, नवद्वार, नवगुण, नवदीप, योग के नौ चक्र आदि आदि।

इन सब में नारी शक्ति का, मातृ शक्ति का जय-जयकार करता उत्सव नवरात्रि के साथ नौदुर्गा का नाम जुड़ा हुआ है। शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायिनी, महागौरी, सिद्धिदात्री और कालरात्रि।

गुजरात के नवरात्रि का गरबा और रास अब सिर्फ राष्ट्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि विदेशों में भी धूम मचाता है। इसके निमित्त अनेक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं। नवरात्रि में नौ कन्याओं का पूजन करने की भी प्रथा है। भाषाविद डॉक्टर योगेन्द्र व्यास ऐसा मानते हैं कि 'अम्बा' शब्द संस्कृत के, 'अब' का अर्थ है पानी, जल। उसे स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'आ' प्रत्यय जोड़ा गया। जो पानीदार है, आर्द्र है, भावनाओं और संवेदनाओं से भीगा हुआ है, वो 'अम्बा' यानि कि माता है। 'अम्बा' शब्द से 'अम्मा' होना समझ सकते हैं।

हरेक क्षेत्र में शक्ति का महत्व, मनुष्य के भीतर छिपी विविध शक्तियों को, 'देवी' का रूप दिया गया है। ये फिर बुद्धि या श्रद्धा, उसमें दैवी तत्व का दर्शन करने में आया है।

नारी सौंदर्य और कर्त्तव्य, दोनों का संगम है। उसमें शिवत्व और शौर्य दोनों ही है। महात्मा गांधी एक आधारभूत प्रश्न पूछते हैं: 'पुरुष किसलिए अपने घर की स्त्रियों को 'गुड़िया' बनाने की इच्छा रखते हैं? राजपूत जब लड़ने में ढ़ीले पड़ जाते हैं, तब माता या पत्नी ही उसे लड़ते लड़ते युद्ध में खप जाने की प्रेरणा देती है।'

एक प्रसंग के अनुसार, एक राजपूत युवक नई शादी करके आता है और दुश्मन के हमले के ढ़ोल की आवाज़ सुनाई देती है। राजपूत युवक दुविधा में पड़ जाता है कि मुझे क्या करना चाहिए? लेकिन नव परणीता राजपूतानी उस भावावेश में आये बिना उसके हाथ में तलवार थमा कर कहती है - 'कंथा रण में पैठके, कोनी जोवे वाट? साथी तारा त्रण छे, हैयु कटारी ने हाथ।'

अगर पति कायरता दिखाकर युद्ध के मैदान से भाग कर आये तो, माता या पत्नी उसे घर में आने ही नहीं देते थे, घर में पैठने ही नहीं देते थे। सुदर्शन का एक नाटक है, जिसमें एक स्त्री का पति युद्ध क्षेत्र से भागकर घर आ जाता है, लेकिन पत्नी घर का द्वारा ही नहीं खोलती। लेकिन उस युवक की माता बहुत ही समझदार सानी है। वो बहू को कहती है : 'मैं तुझे कहती हूँ कि दरवाज़ा खोल। मेरा पुत्र खडग की आवाज़ सुन घबराया हुआ घर आया है। उसे शांति तो चाहिये ना?'

सासू के ऐसे वाक्य से बहू संतुष्ट नहीं हुई। वो विचार कर रही थी कि राजपूतानी होकर सासू माँ आज उल्टा कैसे सोच रही हैं?

इतने में सासू माँ का आदेश: 'बहू, शुद्ध घी का गरम गरम शीरा बनाओ।'

राजपूतानी को कुछ भी समझ में नहीं आता कि आज सासू माँ को हो क्या गया है? लेकिन सासू माँ के आदेश का पालन करना ही पड़े। उसने तवा और तवेता तैयार कर शीरा बनाना चालू कर दिया। आटा भूनते हुए तवे के साथ तवेते के टकराने के आवाज़ यानि की लोखंड की

आवाज़ आ रही थी।

सासू माँ ने पूछा : 'बहू, ये किसकी आवाज़ आ रही है?'

'बा, लोखंड के तवे के साथ तवेते के टकराने की आवाज़ है' - बहू ने कहा।

सासू अवसर देख कहती है: 'लोखंड टकराने की आवाज़ बंद कर। मेरा पुत्र लोखंड की तलवार के टकराने की आवाज़ सुनकर ही घर में आया है। अब तवे और तवेते की आवाज़ सुनकर घर छोड़कर भागेगा तो हम उसे कहाँ ढूंढ़ने जायेंगे?'

माता के शब्दों में रहा हुआ व्यंग्य और टोना राजपूत युवक परख गया और कहा कि : 'माँ, मैं इतना तो कायर नहीं हूँ कि लोखंड के तवे और तवेते की आवाज़ सुनकर भी डर जाऊँ?' राजपूत खड़ा हुआ और रणभूमि में लड़ते लड़ते वीर गति को प्राप्त हुआ।

उत्सव और पर्व जीवन में पवित्र बनाने का संदेश देते हैं और महापुरुष, देवी-देवताओं की तरह त्याग बलिदान के लिए भी संदेश देते हैं।

आज की नारी को सिर्फ और सिर्फ देह के सौंदर्य बनाये रखने के लिए ही अपनी दृष्टि सीमित रखने के बदले अपने शौर्य को प्रगटाने की ज़रूरत है। धर्म स्त्री पर टिका हुआ है, सभ्य स्त्री पर निर्भर है, और फैशन का मूल भी वही है। बात क्यों आगे बढ़ाते हो- कहो ना, एक शब्द में कहें तो दुनिया स्त्री पर टिकी हुई है।

माता के नाम का गरबा गाते हैं तो मन भी 'देवीमय' बनना चाहिए। आजकल गरबा कोलाहल और आवाज़ के प्रदूषण के निमित्त बन गया है। प्रदर्शन प्रियता के वश हुए स्त्री या पुरुष महंगे वस्त्र पहनकर गरबे घूमने के बदले नाच की ओर ढ़लते हुए दिखाई देते हैं।

नवरात्रि 'रात्रि' रहने के बदले नवजागृति संदेश बननी चाहिए। दांडिया से खेलने वाले पुरुष ज़रूर समझें कि वे अपनी शौर्य आवाज़ से दुश्मनों के दांत खट्टे करने का सामर्थ्य रखते हैं। इस बात की समाज और देश को प्रतीति करानी चाहिए। देवी माता आपको देख रही हैं, ऐसा भाव मन में रख सहज और पवित्र दृष्टि से गरबा या नवरात्रि का आनंद लेना चाहिए।

नवरात्रि के त्योहार में हमें पाँच बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए, जिससे ही हमारे भीतर सन्निहित देवत्व को व्यवहार में ला सकेंगे।

1. नवरात्रि सिर्फ नाच गान का उत्सव ही नहीं, बल्कि पवित्रता की दृष्टि से इसे पवित्र उत्सव बनायें।

2. बाह्य दिखावा या प्रदर्शन वृत्ति के वश होकर महंगे वस्त्रों से सजकर दिखाने की कामना हानिकारक है। उससे बचना चाहिए।

3. आपकी वाणी, व्यवहार और आचरण सबमें देवी और दैवी तत्व का पहरा रखें।

4. नवरात्रि उत्सव सादगी भरे रूप को देखने की तड़प है। इसलिए उसे भभके भरे आकर्षण से अछूत न बनायें।

5. गरबा के निमित्त नृत्य के बदले 'सस्ता नाच' के मोह से आप स्वयं को बचायें।

उपरोक्त पाँच बातों को गहराई से समझें और झाँके अपने अंदर... कि कहीं मैं देवत्व के बदले दानव की प्रवृत्ति का रूप तो नहीं बन रहा हूँ? और हम कामना करते हैं कि देवी हमसे प्रसन्न हों, लेकिन प्रसन्न करने के तरीके में कहीं दानव की प्रवृत्ति मिक्स तो नहीं हो जाती। अगर हम इस तरह से अपनी सोच को अंतर्मुखी बनकर झाँककर अपने आप पर पहरा रखेंगे तो अवश्य ही देवत्व वा देवी को प्रसन्न कर पायेंगे, और तभी हम विजयादशमी मनाने के हकदार होंगे और हाँ, तो फिर हम दीपावले में आत्मा रूपी दीप में जो स्वप्न संजोये हैं उसे साकार रूप दे सकेंगे। क्योंकि हमने अपने भीतर छिपे या बाह्य से आये हुए दानव प्रवृत्ति को विवेक रूपी पहरे की मदद से बचा लिया। ऐसा होने पर हमारे आने वाले नये साल में देवत्व के दीप की लौ सदा ही जलती रहेगी और हमारी ज़िन्दगी सुकूनभरी हो जायेगी।

जीवन में जलता रहे सप्त दीप...

ज़िन्दगी में सुख शांति की इच्छा सबको होती है। दिवाली आती है तो उस इच्छा को और ही तीव्र वेग मिलता है। लेकिन सदा ही दिवाली हो तो कितना अच्छा! ऐसा संभव हो सकता है? कहते हैं, असंभव कुछ भी नहीं है। मन है तो ऊँची उड़ान भी हो सकती है। दृढ़ संकल्प के साथ पुरुषार्थ करने वाले को हिमालय भी अवरोध पैदा नहीं करता। हाँ, उसके लिए जागरुकता पूर्वक आयोजन कर निरंतर प्रयत्न करते रहना पड़े। ज़िन्दगी में हर पल, हर दिन दिवाली हो सकती है, उसके लिए सप्त दीपों का हमारे जीवन में सदा जलते रहना ज़रूरी है।

एक है श्रद्धा और विश्वास दीप। मुझे परमात्मा ने इस सृष्टि पर मनुष्य के रूप में भेजा और सबकुछ, सर्व शक्तियाँ, सम्पूर्ण ज्ञान सहित मैं इस धरा पर आया। उसपर मुझे पूर्व विश्वास रखना चाहिए और आत्म-विश्वास को सदा बनाये रखना और स्वयं के ऊपर पूर्ण निश्चय रख परमात्म प्रदत्त शक्तियों का प्रयोजन करने रहना चाहिए।

दूसरा है शक्ति दीप। शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक शक्तियों को सही दिशा में और सही रीति से इस्तेमाल करते रहना पड़े। सद् आचरण, संयम, सतसंग, व्यायाम, शुद्ध सात्विक खुराक, सकारात्मक दृष्टिकोण, अच्छी आदतें और नियमित रूप से ज्ञान का चिंतन अत्यंत आवश्यक है। अगर आलस्य के चपेट में आ गये, तो सद-इच्छायें भी पूरी नहीं हो पायेंगी।

तीसरा है विवेक और संयम दीप। शक्तियों का व्यय किस तरीके से करना है, ये जानते हुए भी अंधा बन जाना, कुसंग या खराब आदत, लोभ-लालच में फँस जाने जैसी अनेक बातों में संयम और विवेक का उपयोग करके आगे बढ़ते रहना चाहिए। कहते हैं, समझ के प्रयोजन से सुख मिलता है, पैसे से नहीं। दृढ़ संकल्प करेंगे तो कोई भी चीज़ें आपको फँसा नहीं पायेंगी।

चौथा है ज्ञान-विज्ञान दीप। ज्ञान और विज्ञान प्राप्त कर स्वयं को गढ़ते रहना चाहिए। जीवन में ज्ञान और विज्ञान दोनों की बहुत आवश्यकता है। संकुचितता को छोड़ते जाना और विशालता को प्राप्त करते जाना होगा। क्योंकि हर चीज़ परिवर्तनशील है, उसे उसी रूप में स्वीकार कर आगे बढ़ना होगा।

पाँचवा है सृजनात्मक प्रवृत्ति दीप। जीवन में हर पल को आनंद से भर लेना, ये प्रवृत्ति बनानी होगी। क्योंकि जीवन अनमोल है, इसीलिए उसे मौज के साथ जीना है। नई-नई चीज़ों को, नये-नये अंदाज़ से, नये-नये ढंग से सोचना और अपने आपको खुश रखना, ऐसी सृजनात्मक प्रवृत्ति को अपनाकर आगे बढ़ना होगा।

छठा है सकारात्मक दीप। निराशाजनक विचारों को छोड़ना और सकारात्मक रवैये को अपनाना और ऐसे चिंतन में रहना कि शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ बनकर रहें।

सातवाँ है प्रसन्न और संतोष दीप। प्रसन्न रहना...खुश रहना...चिन्ता रहित बनना, ये हमारे जीवन का लक्ष्य हो। स्वभाव में सौम्यता धारण करना, मन में हर्षोल्लास बनाये रहेंगे तो हज़ारों नुकसान से बचे रहेंगे। आपके आसपास के हज़ारों दिल तंदुरुस्त रहें, ऐसी कामना करते रहना और खुद आनंद में और प्रसन्न रहकर संतुष्ट रहना। ऐसी प्रवृत्ति से आपको सारा जग आनंदमय लगेगा।

आओ दीप जलायें मन में,
जग कर जग में फैलायें उजियारा।
प्रसन्नता की खुशबू बिखरे सब के दिल में,
फिर निर्मल बन जाये जहाँ ये सारा।।

मन का दमन नहीं...

- पेज 2 का शेष

सन्मार्ग पर चलेंगी। उत्तेजना दूर करना, ये तो मन की वृत्तियों पर लगी हुई चमक हटाने के बराबर है, बाकी वृत्तियाँ तो वैसी की वैसी बरकरार ही रहती हैं। उत्तेजना के लिए दो बातें समझने जैसी है। उत्तेजना वृत्ति के आधार पर जीती है। यदि वृत्ति पर वार किया जाये तो उत्तेजना आपके शरण में आयेगी। वो उत्तेजना पसंदीदा भोजन के लिए चारो ओर भटकती रहेगी। उसकी स्वादेन्द्रिय को सिद्ध करने के लिए मीठे-मीठे ज़ायके के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा ढूंढ़ती रहेगी। वो कामेच्छा को तृप्त करने के लिए एक के बाद एक व्यक्ति को ढूंढ़ता रहेगा। जिसके साथ कोई वैर होता है तो मनुष्य उत्तेजित होकर उसके ऊपर क्रोधित होकर धुआँ-फुआँ करेगा, मन उत्तेजना को जितना प्रोत्साहन देता है, उतना ही समय उसे उत्तेजना को ठंडा करने में लगेगा। उत्तेजित मन तुरंत ही शांत नहीं हो जाता, धीरे-धीरे वो शांत होता है। यानि कि व्यक्ति को उत्तेजना के प्रसंगों पर वार करना चाहिए। कौन सी घटना बनती है जिससे मैं क्रोधित हो जाता हूँ। ये समझकर ऐसी घटनाओं से दूर रहना चाहिए और यदि फिर भी उत्तेजित हो जाते हैं तो उसके बारे में विचार करना चाहिए। इसलिए ऐसी उत्तेजना को समझे नहीं, तो साधना की कोई भी बात हो नहीं सकती। कई लोग ऐसे कहते हैं कि आप अपनी इंद्रियों का दमन करो। आँखें विषय के पीछे पागल बन गई हों, तो संत सूरदास की तरह आँखें फोड़ दो। कान यदि कोलाहल में डूब गये हों, तो सुनना पूर्ण रूप से बंद कर दो और मौन धारण कर लो। लेकिन इस तरह से करने से इंद्रियों का दमन होगा, वृत्तियों का समन नहीं होगा। इसका अर्थ ये है कि इंद्रियों में जगती वृत्ति को दबाना जरूरी नहीं है। मन में जगती भौतिक इच्छाओं पर शास्त्रों को लेकर टूट पड़ने की ज़रूरत नहीं है। तप या त्याग के द्वारा उसे खत्म करने की ज़रूरत नहीं है। उसके बदले ज़रूरत है, बाह्य दुनिया में डूबी हुई इंद्रियों को आंतरिक दुनिया में ले जाने की। यहाँ साधक के लिए पुरुषार्थ की बहुत आवश्यकता है। मानव को, निरंतर पुरुषार्थ कर इन बाह्य इंद्रियों को मोड़कर स्वयं द्वारा भीतर के आनंद को प्राप्त कर सकता हूँ, ऐसे स्वयं से संवाद करना चाहिए।

वो ही कर्मेन्द्रिय आपको कोलाहल के बजाय अनहद का नाद सुनायेगी। व्यर्थ बातों या गपशप के बदले सतसंगों में जाकर श्रवण करने का भाव जगायेगी। आपकी आँखें जगत की सुंदरता देखने की नई सौंदर्यानुभूति करायेगी। इंद्रियों को थोड़ा सा अंदर की तरफ मोड़ेंगे तो धीरे धीरे चमत्कार अनुभव होगा। पहला काम है आत्मा को पहचानना और उससे भी ज़्यादा महत्व का काम है कि जीवन के केन्द्र में इंद्रियों के बदले आत्मा को स्थान देना। उसके लिए सिर्फ और सिर्फ आत्मा की महिमा करने से कुछ नहीं होगा, हमारी आत्मा शुद्ध, बुद्ध, निर्विकार और चेतन स्वरूप है, ऐसा बारंबार बोलते रहने से कुछ नहीं होता, बल्कि हमें स्थूलता को देखने की वृत्तियों को सूक्ष्म रूप से देखना पड़ेगा और उसे मोड़ना पड़ेगा। तो देखो, इस तरह से अगर करेंगे तो कितना मज़ा आयेगा! ज़रा इंद्रियों को मोड़कर उसे समझने की कोशिश तो करें! आपकी इन्द्रियाँ ही आपको परमानंद तक पहुँचा देंगी!

हाथरस-उ.प्र.। 'पुलिस प्रशासन एवं जनसहभागिता सम्मेलन' में दीप प्रज्वलित करते हुए कृषि विपणन एवं महिला कल्याण राज्यमंत्री स्वाती सिंह, ब्र.कु. सरोज, ब्र.कु. शान्ता तथा अन्य।

बड़ी पटन देवी कॉलोनी-बिहार। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् पटना की मेयर सीता साहू को चुनरी ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. रानी।

कोटा-राज.। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए कोटा ओपन युनिवर्सिटी के वाइस चांसलर पी.के. दशोरा, यू.आई.टी. के चेयरमैन राम कुमार वर्मा, ब्र.कु. उर्मिला तथा अन्य।

मथुरा-उ.प्र.। 'एकाग्रता की शक्ति का विकास' विषयक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. सविता,माउण्ट आबू, ब्र.कु. कृष्णा, ब्र.कु. मनोज, ब्र.कु. किशन लाल, फाइनेंशियल ऑफिसर आलोक, स्टेट ऑफिसर यतिन, डी.जी.एम.जी.,एम.पी.सी.एस. ब्रज बिहारी कुशवाहा तथा अन्य प्रशासनिक अधिकारियों के साथ आई.ओ.सी.एल. के अधिकारीगण।

सिवान-बिहार। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए अपर समाहर्ता कुमार रामानुजम, डी.पी.ओ. विजय शंकर, उप-निर्वाचन पदाधिकारी श्रीनिवास, ए.डी.पी.ओ. प्रमोद कुमार, ब्र.कु. सुधा तथा अन्य।

मेहम-हरियाणा। गवर्नमेंट हाई स्कूल में ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. सुमन। साथ हैं ब्र.कु. चेतना, प्रिन्सीपल श्रीमति शारदा तथा स्टाफ।

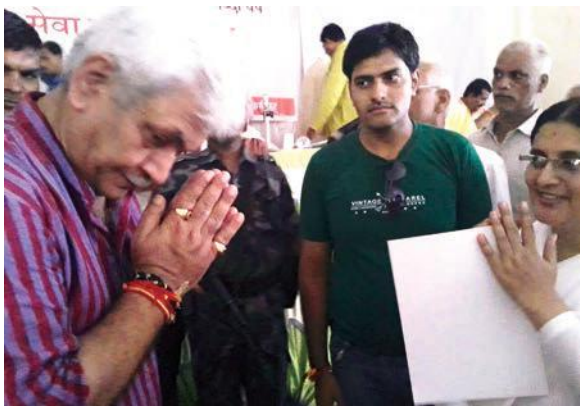

गाज़ीपुर-उ.प्र.। ब्र.कु. निर्मला को उनके समाज के प्रति उत्कृष्ट एवं नि:स्वार्थ सेवाओं के लिए प्रशंसा पत्र देने के पश्चात् उनका अभिवादन करते हुए मनोज सिन्हा,मिनिस्टर ऑफ स्टेट फॉर रेलवेज़ एंड कम्युनिकेशन।

आगरा-सिकंदरा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् सांसद चौधरी बाबूलाल को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सरिता तथा ब्र.कु.गीता।

वाराणसी-उ.प्र.। पॉपुलर हॉस्पिटल में 'योग साधना ध्यान कक्ष' का उद्घाटन करते हुए विधायक सौरव श्रीवास्तव, ब्र.कु. चन्दा, ब्र.कु. ओ.एन. उपाध्याय, पॉपुलर हॉस्पिटल ग्रुप के चेयरमैन डॉ. ए.के. कौशिक तथा पॉपुलर हॉस्पिटल की प्रबन्ध निदेशक डॉ. किरण कौशिक।

हाजीपुर-बिहार। नवरात्रि के अवसर पर चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए एस.डी.ओ. रविन्द्र कुमार, ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. आरती तथा अन्य।

उदयपुर-राज.। किसान सशक्तिकरण अभियान कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. शशीकान्त,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. रीटा, रमेश अमेटा, असिस्टेंट डायरेक्टर,कृषि विस्तार, ब्र.कु. सुमन्त,माउण्ट आबू, ब्र.कु. कनु, सोशल एक्टीविस्ट-मैजीशियन,अहमदाबाद।

फतेहाबाद-हरियाणा। कार्यक्रम के दौरान सैनिकों को ईश्वरीय संदेश देते हुए सीता।

परमात्मा सर्व गुणों का सागर, ना कि निर्गुण

- गतांक से आगे...

भगवान धर्म क्षेत्र और कुरुक्षेत्र के विषय में स्पष्ट करते हैं कि धर्मक्षेत्र में यथार्थ् ज्ञान-युक्त कर्म करने के आधार कौन-से हैं? जो सद्गुण हैं, वही उसके ज्ञान-युक्त कर्म करने के या धर्म क्षेत्र में प्रवृत्त होने के आधार हैं। जैसे कि विनम्रता, दंभहीनता, अहिंसा, सहनशीलता, सरलता, आज्ञाकारिता, पवित्रता, स्थिरता, आत्म-संयम, इंद्रिय तृप्ति के विषयों का परित्याग, निरहंकारी, वैराग्य, अनासक्त, नष्टोमोहा, हर परिस्थिति में संतुलित, अनन्य अव्यभिचारी भक्ति भाव, एकांतवासी, उपरामता, आत्म-अनुभूति एवं परमात्म-अनुभूति करने की इच्छा, ये सारे ज्ञान-युक्त कर्म करने के आधार या धर्म क्षेत्र की प्रवृत्ति को बढ़ाने के आधार हैं।

फिर भगवान ने कहा कि अज्ञेय परमपुरुष के विषय में सुनो। आत्मा के अपने क्वालिफिकेशन्स हैं, परमात्मा के अपने हैं। परमात्मा के विषय में और स्पष्टीकरण भगवान आगे इस अध्याय में करते हैं।

परमात्मा इंद्रियातीत हैं, जैसे कि मनुष्यात्माओं को स्थूल इंद्रियाँ होती हैं। परमात्मा इंद्रियों से परे है, अतीत है। वो निर्गुण एवं सर्वगुणों के सागर हैं। अब यहाँ एक विरोधाभास आता है कि वे निर्गुण भी हैं और सर्वगुणों के सागर भी हैं। निर्गुण का अगर शाब्दिक अर्थ लिया जाए, तो निर्गुण माना जिसमें कोई गुण नहीं है। लेकिन फिर भी वो सर्वगुणों का सागर है। ये कैसे हो सकता है? निर्गुण और सर्वगुण, निर्गुण माना जिसके अंदर मनुष्य सदृश्य गुण नहीं है, लेकिन जो गुणों में अनंत है। उस रूप में उसको कहा निर्गुण।

जैसे परमात्मा को निराकार कहा, निराकार का अगर शाब्दिक अर्थ लिया जाए तो जिसका कोई आकार नहीं है। लेकिन परमात्मा का यदि कोई आकार नहीं तो बिना आकार के तो कोई चीज़ इस संसार में होती ही नहीं है। हवा है, जो दिखाई नहीं देती है। लेकिन फिर भी उसका नाम और आकार है। एक चित्रकार को अगर चित्र निकालना हो और उसको चक्रवात तूफान दिखाना हो तो दिखा सकता है कि नहीं? दिखा सकता है।

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

जिस हवा का आकार नहीं है, उसको भी एक चित्रकार अपने चित्र में ढ़ाल देता है कि चित्र देखकर के कहेंगे बड़ी तूफानी हवा चल रही है। शांत प्रकृति दिखानी हो तो भी दिखा सकता है। जैसे हवा चल ही नहीं रही है, जैसे पत्ता भी हिल नहीं रहा है। पूरा प्रतिबिंब पानी के अंदर नज़र आता है। जो हवा का आकार नहीं है, उसको भी चित्रकार अपने चित्र के अंदर ढ़ाल सकता है। तो क्या परमात्मा का स्वयं का नाम, रूप व आकार नहीं होगा? निराकार का भाव यहां है कि जिसका आकार मनुष्य सदृश्य नहीं है। उस अर्थ में कहा है निराकार। निर्गुण माना जिसके अंदर मनुष्य सदृश्य गुण नहीं हैं लेकिन जो गुणों में अनंत है।

फिर आगे कहते हैं, सूक्ष्म होने के कारण वो भौतिक इन्द्रियों के द्वारा जानने वा देखने से परे है। इन चर्म चक्षुओं से उसको देखा नहीं जा सकता है या जाना नहीं जा सकता है। लेकिन फिर भी वो न्यारा और प्यारा है। वह संसार में उत्पत्ति, पालना और संहार का करनकरावनहार है। क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु और महेश के माध्यम से वो अपना कार्य कराता है। खुद करता नहीं है, लेकिन कराता है।

इसलिए उसको करनकरावनहार कहा जाता है। वो प्रकाशमान है, पूर्ण ज्ञान स्वरूप और ज्ञान का सागर है और ज्ञान का लक्ष्य है। इसे केवल मेरे भक्त ही पूरी तरह समझ सकते हैं और मेरे स्वभाव को प्राप्त कर सकते हैं, ऐसा भगवान कहते हैं। - क्रमश:

ख्यालों के आईने में...

परखता तो वक्त है,
कभी हालात के रूप में,
कभी मजबूरियों के रूप में।
भाग्य तो बस आपकी
काबिलियत देखता है!

हमेशा खुश रहना चाहिए,
क्योंकि परेशान होने से
कल की मुश्किल दूर नहीं होती,
बल्कि आज का सुकून
भी चला जाता है।

जो सफर की शुरुआत करते हैं,
वे मंज़िल भी पा लेते हैं,
बस, एक बार चलने का
हौसला रखना ज़रूरी है,
क्योंकि, अच्छे इंसानों का तो
रास्ते भी इन्तज़ार करते हैं...।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें
आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

'Peace of Mind' channel

TATA Sky 1065 | airtel digital TV 678 | FASTWAY | GTPL | DEN
Videocon d2h 497 | Reliance Digital TV 640 | hathway | UCN | DigiCable | SITI

Free to Air
ABS FREE DTH
KU Band with MPEG (DVB-S/S2) Receiver
LNB Freq. - 10600/10600
Tans Freq. - 11911
Polarization - Horizontal
Symbol - 44000
22k - On
Satellite - ABS-2; 75° E
Contact
Brahma Kumaris, 2nd Flr Anand Bhavan, Shantivan, Sirohi, Abu Rd, Raj-307510
+91 9414151111
+91 8104777111
info@pmtv.in
www.pmtv.in

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें...

कार्यालय- ओमशान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए

सम्पर्क - M - 9414006096, 9414182088,
Email- omshantimedia@bkivv.org,
Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, आजीवन 4500 रुपये ।

विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम से मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

कथा सरिता

ये सच है.... या झूठ...

एक बार एक गांव में मंदिर का काम चल रहा था। मंदिर 'आदिवासी' और 'गरीब' लोग बना रहे थे। एक आदिवासी बड़ी मूर्ति बना रहा था!

कुछ दिन बाद मंदिर बनकर तैयार हो गया। मंदिर में पुजारियों द्वारा हवन, मूर्ति स्थापना और मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा आदि कार्य सम्पन्न हो गया।

अगले दिन मन्दिर दर्शन के लिए खोल दिया गया। वह मूर्तिकार जिसने मूर्ति बनाई थी, वो भी दर्शन को आया था। वह ख़ुशी के मारे बिना चप्पल उतारे मन्दिर में प्रवेश कर गया।

पुजारी उसपर क्रोधित हुआ और कहा - 'मूर्ख, तू जाहिल है क्या, चप्पल पहनकर मन्दिर में नहीं आते। जा, चप्पल बाहर उतार के आ!'

आदिवासी बोला-'पुजारी जी, जब मैं चप्पल पहनकर मूर्ति बना रहा था और चप्पलों से उसपर चढ़ जाता था तब किसी ने मना नहीं किया!'

पुजारी बोला - 'बेवकूफ, हमने अपने मन्त्रों से मूर्ति में प्राण डाल दिए हैं, समझा!'

बेचारा आदिवासी चुपचाप अपने घर चला गया। कुछ दिन बाद वह दोबारा मन्दिर गया तो देखा की मन्दिर में ताला लगा था।

उसको किसी ने बताया की पुजारी जी का बेटा खत्म हो गया है। यह सुनकर वह दौड़कर पुजारी के घर गया। वहाँ सब लोग रो रहे थे। वह धीरे से पुजारी के पास जाकर बोला: 'आप रो क्यों रहे हैं, जैसे आपने मूर्ति में अपने मन्त्रों से प्राण डाल दिए, वैसे ही अपने बेटे में प्राण डाल दीजिए।' यह सुनकर सब अचंभे से उसकी तरफ देखने लगे ।

पुजारी बोला -'क्या ऐसा कभी होता है, कोई मरा हुआ दुबारा जीवित होता है।'

आदिवासी बोला: 'तो आपने मन्दिर में जो बात बोली, क्या वो झूठ थी?'

इस प्रश्न का उत्तर आज तक नहीं मिला है।

अंधविश्वास भगाओ, देश बचाओ।

सात दिन ही बचे हैं...

एक बार की बात है, संत तुकाराम अपने आश्रम में बैठे हुए थे। तभी उनका एक शिष्य, जो स्वभाव से थोड़ा क्रोधी था, उनके समक्ष आया और बोला- 'गुरूजी, आप कैसे अपना व्यवहार इतना मधुर बनाये रहते हैं, ना आप किसी पे क्रोध करते हैं और ना ही किसी को कुछ भला-बुरा कहते हैं! कृपया अपने इस अच्छे व्यवहार का रहस्य बताइए।'

संत बोले- 'मुझे अपने रहस्य के बारे में तो नहीं पता, पर मैं तुम्हारा रहस्य जानता हूँ !'

'मेरा रहस्य! वह क्या है गुरू जी?' शिष्य ने आश्चर्य से पूछा।

'तुम अगले एक हफ्ते में मरने वाले हो!' संत तुकाराम दु:खी होते हुए बोले।

कोई और कहता तो शिष्य ये बात मज़ाक में टाल सकता था, पर स्वयं संत तुकाराम के मुख से निकली बात को कोई कैसे काट सकता था!

शिष्य उदास हो गया और गुरू का आशीर्वाद ले वहां से चला गया।

उस समय से शिष्य का स्वभाव बिल्कुल बदल सा गया। वह हर किसी से प्रेम से मिलता और कभी किसी पे क्रोध न करता, अपना ज़्यादातर समय ध्यान और पूजा में लगाता। वह उनके पास भी जाता जिससे उसने कभी गलत व्यवहार किया था और उनसे माफ़ी मांगता। देखते-देखते संत की भविष्यवाणी को एक हफ्ते पूरे होने को आये।

शिष्य ने सोचा, चलो एक आखिरी बार गुरू के दर्शन कर आशीर्वाद ले लेते हैं। वह उनके समक्ष पहुंचा और बोला- 'गुरूजी, मेरा समय पूरा होने वाला है, कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिये!'

'मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है पुत्र। अच्छा, ये बताओ कि पिछले सात दिन कैसे बीते? क्या तुम पहले की तरह ही लोगों से नाराज़ हुए, उन्हें अपशब्द कहे?'

संत तुकाराम ने प्रश्न किया।

'नहीं-नहीं, बिल्कुल नहीं। मेरे पास जीने के लिए सिर्फ सात दिन थे, मैं इसे बेकार की बातों में कैसे गंवा सकता था! मैं तो सबसे प्रेम से मिला, और जिन लोगों का कभी दिल दुखाया था उनसे क्षमा भी मांगी।' शिष्य तत्परता से बोला।

'संत तुकाराम मुस्कुराए और बोले - 'बस यही तो मेरे अच्छे व्यवहार का रहस्य है। मैं जानता हूँ कि मैं कभी भी मर सकता हूँ, इसलिए मैं हर किसी से प्रेमपूर्ण व्यवहार करता हूँ।'

शिष्य समझ गया कि संत तुकाराम ने उसे जीवन का यह पाठ पढ़ाने के लिए ही मृत्यु का भय दिखाया था।

वास्तव में हमारे पास भी सात दिन ही बचे हैं :-

रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र और शनि, आठवां दिन तो बना ही नहीं है।

तो आइये, आज से ही परिवर्तन आरम्भ करें।

मैं क्यों पापी...!

एक बार एक ऋषि ने सोचा कि लोग गंगा में पाप धोने जाते हैं, तो इसका मतलब हुआ कि सारे पाप गंगा में समा गए और गंगा भी पापी हो गयी !

उसने यह जानने के लिए तपस्या की, कि पाप कहाँ जाता है ?

तपस्या करने के फलस्वरूप देवता प्रकट हुए, ऋषि ने पूछा: 'भगवन, जो पाप गंगा में धोया जाता है वह पाप कहाँ जाता है?'

भगवान ने कहा: 'चलो गंगा से ही पूछते हैं।' दोनों लोग गंगा के पास गए और कहा: 'हे गंगे! जो लोग तुम्हारे यहाँ पाप धोते हैं, तो इसका मतलब आप भी पापी हुईं!'

गंगा ने कहा: 'मैं क्यों पापी हुई, मैं तो सारे पापों को ले जाकर समुद्र को अर्पित कर देती हूँ !'

अब वे लोग समुद्र के पास गए और पूछा: 'हे सागर! गंगा जो पाप आपको अर्पित कर देती है तो इसका मतलब आप भी पापी हुए !'

समुद्र ने कहा: 'मैं क्यों पापी हुआ, मैं तो सारे पापों को लेकर भाप बना कर बादल बना देता हूँ !'

अब वे लोग बादल के पास गए और कहा 'हे बादलों! समुद्र जो पापों को भाप बनाकर बादल बना देते हैं, तो इसका मतलब आप पापी हुए!'

बादलों ने कहा: 'मैं क्यों पापी हुआ, मैं तो सारे पापों को वापस पानी बरसा कर धरती पर भेज देता हूँ, जिससे अन्न उपजता है, जिसको मानव खाता है, उस अन्न में जो अन्न जिस मानसिक स्थिति से उगाया जाता है और जिस वृत्ति से प्राप्त किया जाता है, जिस मानसिक अवस्था में खाया जाता है, उसी अनुसार मानव की मानसिकता बनती है!

शायद इसीलिये कहते हैं....

'जैसा खाए अन्न, वैसा बनता मन।'

इसीलिये सदैव भोजन सिमरन और शांत अवस्था में करना चाहिए और कम से कम अन्न जिस धन से खरीदा जाए वह धन ईमानदारी एवं श्रम का होना चाहिए !

गुवाहाटी-असम। जीएमसीएच ऑडिटोरियम हॉल में ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए माननीय मुख्यमंत्री सर्वानंद सोनोवाल। मंचासीन हैं ब्र.कु. जोनाली, ब्र.कु. शीला दीदी, ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी,माउण्ट आबू, ब्र.कु. शारदा, असम सरकार के मुख्य सचिव विनोद कुमार पीपरसेनिया एवं असम फाइनेन्शियल कॉर्पोरेशन के चेयरमैन ब्र.कु. विजय गुप्ता।

नई दिल्ली। जुएल ओरम,यूनियन मिनिस्टर,आदिवासी डेवलपमेंट को माउण्ट आबू में होने वाले इंटरनेशनल कॉन्फ्रेन्स का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. इन्दुमती, ब्र.कु. विजय, ब्र.कु. प्रफुल्ला तथा अन्य।

लाखेरी-राज.। शिक्षक दिवस के अवसर पर महाराजा मूलसिंह डिग्री कॉलेज में 'शिक्षा में आध्यात्मिकता' विषयक संगोष्ठी के दौरान मंचासीन हैं मुख्य अतिथि बाबूलाल वर्मा,खाद्य एवं आपूर्ति राज्यमंत्री, विशिष्ठ अतिथि पुलिस उपाधीक्षक नरपत सिंह, थाना प्रभारी श्रीमती कौशल्या, प्रधानाध्यापक सच्चीदानन्द जी तथा बूंदी सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. कमला दीदी।

बीबीगंज-फर्रुखाबाद(उ.प्र.)। शहर में निकाली गई शिव संदेश शोभायात्रा में उपस्थित हैं ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. रीता तथा ब्र.कु. सुरेश चन्द्र गोयल।

आगरा-शास्त्रीपुरम। माउण्ट आबू से आये ब्र.कु. अनिल का गुलदस्ता भेंट कर सम्मान करते हुए ग्रामीण सम्पादकीय सचिव नरेश कुमार सक्सेना। साथ हैं ब्र.कु. मधु तथा ब्र.कु. शालू।

आगर-उ.प्र.। केन्द्रीय कारागार में सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में जेलर रत्नागिरी जी, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. गीता व अन्य।

अलौकिक पढ़ाई भी...!

आप सभी के समक्ष एक प्रश्न है कि जब हम आप दुनिया में थे, पढ़ रहे थे, उस समय पर भी पढ़ाई और करियर को चुनने के लिए हमारा वश नहीं होता था। हमें या तो फ्रेन्ड्स बताते थे या फिर माता-पिता बताते थे कि या तो आप ये पढ़ो या वो पढ़ो, अपना कुछ भी नहीं था। इसीलिए बच्चे कहते रहे, करना मैं यह चाहता था, लेकिन उनके कहने पर मैंने यह किया।

हो सकता है हम सौ प्रतिशत गलत हों, हो सकता है सही भी हों, लेकिन आप इसमें ना फँस, अपने हिसाब से देखो कि सच क्या है। एक तरफ आप जो करना चाहते हैं, दूसरी तरफ पूरा समाज, लोग, माता-पिता आपसे जो करवाना चाहते हैं। हमारे जीवन के दो ऐसे निर्णय होते हैं शुरू के, जिसमें पहला है पढ़ना व करियर, तथा दूसरा है शादी करना। यही तो सभी के जीवन के दो पहले निर्णय करने होते हैं। इसी पर हमने देखा है कि पूरी दुनिया का ज़ोर चलता है। आपका किसी चीज़ में मन लगता है, या नहीं लगता है, लेकिन लोग आपके ऊपर थोपते रहे और हम कोसते रहे। बाद में... अरे! मैं यह नहीं, यह करता तो अच्छा होता।

आज हम आध्यात्मिक जीवन की इसी से तुलना करके देखें तो इसमें भी कइयों का अनुभव यही कहता है कि मैं इसमें आना नहीं चाहता था, लेकिन मम्मी, पापा के साथ आते-आते हमारा इंट्रेस्ट बढ़ गया, या फिर मैं जुड़ गया, मुझे अच्छा लगने लगा। यहाँ भी वही बात है, कि मेरा यहाँ भी चुनाव करने का निर्णय आधार में है, कुछ दिन में ऐसा भी हुआ कि हमें ज्ञान बोरिंग लगेगा, फिर आप कहेंगे कि मैंने तो ऐसे ही आप लोगों का मन रखने के लिए कर लिया। मेरा मन कुछ और करने का था। जिन्हें भी आज ज़बरदस्ती जोड़ा गया है, सभी ज़्यादातर कुछ दिनों में अपने आप को पूरी तरह से संतुष्ट नहीं पाते हैं और छोड़कर जाने की सोचते हैं। सांसारिक जीवन में जो लोग नौकरी, धंधा करते हैं, आप उनसे मिलिए और पूछिये कि आप खुश हैं, तो उत्तर शायद नहीं ही होगा। क्योंकि उन्होंने यह निर्णय दुनिया के डर से लिया है। लोगों ने इतना दबाव डाला कि करना पड़ गया। आप सभी को नहीं लग रहा कि ये क्यों हो रहा है हमारे आध्यात्मिक जीवन में या फिर लौकिक जीवन में। इसकी थोड़ी गहराई में चलते हैं।

आपको हम बताना चाहेंगे कि ज़्यादातर लोगों को यह पता ही नहीं चलता कि उन्हें जीवन में करना क्या है। वैसे ही विद्यार्थियों को भी नहीं पता चलता कि उनका किसमें करियर बनाने का मन है, या किसमें वे सक्षम हैं। जीवन में या पढ़ाई में कुछ अच्छा करने के लिए, करियर बनाने के लिए हमें बैठना पड़ेगा, सोचना पड़ेगा, प्लैन करना पड़ेगा, वो कोई भी नहीं करना चाहता। कौन जायेगा इतना कुछ करने। सभी आराम तलब हैं, बैठ के हवाई किले बनाने में लगे हैं।

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

आध्यात्मिक जीवन यदि इतना आसान होता तो सभी उस चरम अवस्था को प्राप्त नहीं कर जाते! यह भी तो पढ़ाई है ना। इसमें भी बैठ के सोचना पड़ेगा। यह आध्यात्मिक करियर ऐसे नहीं बनेगा। इसको भी यदि आपने अपने मन से चुना है तो इसमें भी आपको कभी सफलता, कभी असफलता मिलेगी, ऊपर नीचे होगा, लेकिन उसे छोड़ आगे बढ़ना, उसका आधार किसी और को ना बना आगे बढ़ते जाना चाहिए।

यह पढ़ाई हर तरह के करियर बना देने में सक्षम है। बस करने के लिए, थोड़ा सहन कर, समा कर, थोड़ा त्याग भी नींद का, आराम का, इधर-उधर जाने का, समय वेस्ट करना छोड़ना तो पड़ेगा ना! यही करने पर ही लक्ष्मी नारायण की डिग्री हासिल होगी। नहीं तो यहाँ भी वही हो जायेगा...।

कटक-ओडिशा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् शाश्वत मिश्रा,आई.ए.एस.,कमिश्नर ऑफ कमर्शियल टैक्सेस को ईश्वरीय पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सुलोचना।

मन की बात

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्नः- बाबा से मिलने के बाद मेरे जीवन में सुख-शांति आ गई। मेरी जन्म-जन्म की प्यास बुझ गई। परंतु मेरे परिवार में अभी भी अशांति बनी रहती है, कोई न कोई विघ्न आते ही रहते हैं। मैं इनसे मुक्ति का उपाय जानना चाहता हूँ?

उत्तरः- आप यदि अमृतवेले उठकर बहुत पावरफुल योग करेंगे तो आपके घर के अनेक विघ्न हट जायेंगे। घर को निर्विघ्न व सुख-शांति सम्पन्न बनाने के लिए घर के वायब्रेशन्स को खुशी व प्रेम से भरना आवश्यक है। जिस परिवार में खुशी व प्रेम होगा, वहां आपदाएं विपदाएं ठहरेंगी ही नहीं। खुशी के लिए एक ही बात करें कि किसी भी छोटी बात को तूल न दें। हर बात को हल्का करके जल्दी से जल्दी समाप्त किया करें। कुछ लोगों की आदत होती है बातों को लम्बा खींचने की, वे बातों को समाप्त करते ही नहीं। इससे सबकी खुशी नष्ट होती है। आपसी प्रेम बढ़ाने के लिए सभी को इस नज़र से देखो कि ये सब आत्माएं देवकुल की महान् आत्माएं हैं।

घर निर्विघ्न रहे इसके लिए अपने घर में, दुकान में या ऑफिस में 5 बार बाप-दादा का आह्वान करें और यह फील करें कि बाप-दादा आपके घर में आ गये और उनके अंग-अंग से चारो ओर किरणें फैल रही हैं।

तीसरी बात - घर में तीन बार दस-दस मिनट बैठकर इस तरह से योग करो कि मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ और ज्ञान सूर्य की किरणें मुझ पर पड़ रही हैं, फिर वो पूरे घर में फैल रही हैं। ऐसा करना नियम बना लो तो विनाशकाल में भी सुखद अनुभव होंगे।

प्रश्नः- मैंने पवित्रता की प्रतिज्ञा कर ली है, परन्तु अभी भी मुझे अपवित्र स्वप्न आते हैं तथा बुरे संकल्प भी चलते हैं, मैं अपनी पवित्रता से संतुष्ट नहीं हूँ। मेरा संकल्प तो सम्पूर्ण पवित्र बनने का है, उपाय बतायें?

उत्तरः- सम्पूर्ण पवित्रता की यात्रा एक लम्बी यात्रा है। इसके लिए चाहिए लम्बे काल की राजयोग की साधना। अपवित्रता के संस्कार लम्बे काल की तपस्या से ही नष्ट होंगे। यदि ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करके कोई मनुष्य योग-तपस्या नहीं करता तो ब्रह्मचर्य उसे निराशा ही प्रदान करेगा। इसलिए जिन्होंने ब्रह्मचर्य का तप अपनाया है उन्हें प्रतिदिन 4 घण्टे योग-साधना करनी ही चाहिए, तब पवित्रता जीवन का आनंद बन जायेगी।

काम वासना को दबाने से वह पुनः स्वप्न व विकल्पों के रूप में जागृत होगी। वासना के कीटाणुओं को नष्ट करना है 'योग-अग्नि' से। तीन तरीकों से ये शक्ति रूपांतरित होती है। राजयोग की साधना से, मनन चिंतन से व कठिन परिश्रम से। यदि ऐसा नहीं तो ये शक्ति विघ्नकारी होगी। साथ में भोजन भी हल्का करें, मिर्च मसाले छोड़ दें। दक्षिण भारत के एक कुमार ने गाय के दूध पर जीवनयापन शुरु किया। 8 मास हो गये होंगे, वह सम्पूर्ण स्वस्थ है और उसकी पवित्रता आनंदकारी है। ज़रूरी नहीं कि आप भी ऐसा ही करें परन्तु भोजन की स्थूलता पवित्रता में बाधक है।

दो काम आप और करें। सवेरे आँख खुलते ही 7 बार संकल्प करें कि मैं पवित्रता का देवता हूँ, मेरी पवित्रता अति सुखकारी है और जब भी पानी या दूध पीयें तो उसे दृष्टि देकर 7 बार संकल्प करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ फिर पीयें। विशेषकर सोने से पूर्व यह प्रयोग अवश्य करें तथा भोजन खाते भी व बनाते भी यही अभ्यास करें, इससे आपकी सारी समस्याएं समाप्त हो जायेंगी।

प्रश्नः- मेरी एक समस्या है कि जब मेरे पापा बीमार होते हैं तो मुझे उनसे मिलने नहीं दिया जाता है। ये कह दिया जाता है कि ये भी मोह है। इससे मैं भारी हो जाती हूँ, मेरे पापा ज्ञान के एकदम विरूद्ध हैं.. क्या ये ठीक है व मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तरः- अनेक ज्ञानी आत्माएं मोह व कर्त्तव्य में अन्तर नहीं कर पाते। वे नहीं जानते कि अनासक्त रहकर सम्बंधों को कैसे निभाया जाए। ये अल्प ज्ञान का ही प्रतीक है। आपको उनसे अवश्य मिलना चाहिए। आप इष्ट देवी हैं, आपकी दुआओं से वे ठीक हो ही जायेंगे। उन्हें आत्मिक दृष्टि से देखते हुए प्रतिदिन सकाश भी देनी चाहिए। नातों को अलौकिक रूप से निभाना बड़े-छोटे सभी को सीखना चाहिए। हम ऐसे परस्पर प्रेम व शुभ भावनाओं से रहें जिससे ज्ञान प्रत्यक्ष हो, अन्यथा स्वार्थ, अहम् व छोटे विचार ही प्रत्यक्ष होते हैं। आप भारी न हों, मन को हल्का रखकर अपना कर्त्तव्य अवश्य पूरा करें चाहे मूल्य कुछ भी चुकाना पड़े।

प्रश्नः- मैं इनडायरेक्ट एक प्रश्न पूछ रही हूँ - एक व्यक्ति बहुत समय से ज्ञान में है, परन्तु पार्टियों में शराब भी पीता है और कहता है कि यह मेरी आदत नहीं है, मैं तो शौकियाना करता हूँ... ऐसे व्यक्ति की गति क्या होगी?

उत्तरः- ऐसे महापुरुष की गति वही होगी जो एक शराबी की होती है। वास्तव में तो वह ज्ञान में है ही नहीं, उसे स्वयं को बाबा का बच्चा भी नहीं कहना चाहिए। यह बाबा का अनादर है। भगवान के बच्चे और शराब! दोनों का कोई नाता नहीं। शराब का नाता तो आसुरी सम्प्रदाय से है। उसे यह बुरा शौक छोड़ ही देना चाहिए। अपने देव स्वरूप व महान स्वरूप को याद करके श्रेष्ठ स्थिति में स्थित होना चाहिए।

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com

कुन्ड-रेवाड़ी(हरियाणा)। स्कूल में बच्चों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा व ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् स्कूल स्टाफ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. शालू, ब्र.कु. दयानंद तथा ब्र.कु. महेन्द्र।

भरतपुर-राज.। राजस्थान किसान सशक्तिकरण अभियान कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पर्यटन कला एवं संस्कृति राज्यमंत्री कृष्णेन्द्र कौर दीपा, जिला कलेक्टर डॉ. एन. के. गुप्ता, कृषि विश्वविद्यालय के डीन डॉ. अमर सिंह, ओ.पी. जैन,ए.डी.एम., गणेश मीणा,संयुक्त निदेशक,आत्म परियोजना, ब्र.कु. सरोज दीदी, ब्र.कु. कविता तथा अन्य।

जयपुर-राजापार्क। किसान सशक्तिकरण अभियान के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए कृषि राज्यमंत्री प्रभुलाल सैनी, दयाल सिंह चौधरी, डायरेक्टर,आत्म योजना, ग्राम विकास प्रभाग की चेयरमैन ब्र.कु.सरला दीदी, कैलाश चौधरी,भाजपा किसान मोर्चा तथा सब ज़ोन इंचार्ज ब्र.कु.पूनम दीदी।

दुर्योधन द्वारा रचित चक्रव्यूह...

- ब्र.कु. शिव स्वरूप सिंह,अमरोहा,उ.प्र.

आज जब हम अपनों से मिलते हैं तो सबसे पहले कुशलक्षेम पूछते हैं, क्यों, क्योंकि आज सारा संसार ही दु:खी है। कारण आज मनुष्य का सम्बंध सुख के स्रोत सुखदाता परमपिता परमात्मा से टूट चुका है, तथा वह इस भौतिकवादी युग में तमोप्रधान इच्छाओं से युक्त येन केन प्रकारेण धन कमाने की होड़ में लगा हुआ है। वह इस भौतिकवादी तमो प्रधान युग की चकाचौंध में अन्धा हो गया है। तमोप्रधान दुनिया में तमोप्रधान इच्छायें इतनी प्रबल हो गयी हैं कि उनकी पूर्ति हेतु मानव अनिश्चित ठिकाने पर भागा ही जा रहा है।

अत: हमारी झंझटों का मूल कारण हमारी तमोप्रधान इच्छाएं ही हैं। निकृष्ट भोग का ही नाम काम विकार है। इच्छा पूर्ति न होने से क्रोध की उत्पत्ति होती है। इच्छाओं के बाहुल्य का वेग लोभ विकार है। किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति पर अधिकार बनाये रखना मोह विकार है। मानशान की इच्छा की अभिव्यक्ति बने रहना अंहकार है। किसी दूसरे की उन्नति, प्रशंसा या प्रतिभा को देखकर वैसी या उससे अधिक प्राप्ति की इच्छा ईर्ष्या द्वेष कहलाती है। इस प्रकार इच्छाओं में बंधा हुआ मनुष्य एक विकार से दूसरे विकार के जाल में मकड़ी की तरह फँसा रहता है। वह अपनी उन्नति नहीं कर पाता, बल्कि एक इच्छा से दूसरी, तीसरी इच्छा में उसका स्थानान्तरण होता रहता है। वह इन इच्छाओं के चक्रव्यूह में एक बार घुस तो जाता है, परन्तु वीर अभिमन्यु (देह अभिमान) की तरह इस दुर्योधन के चक्रव्यूह से बाहर निकलना नहीं जानता। श्रीमद्भगवद्गीता में बताया गया है कि – अर्जुन ही इस चक्रव्यूह से बाहर निकलने का रास्ता जानता था।

अत: इस चक्रव्यूह से बाहर निकलने के लिए एक विद्या विशेष, आध्यात्मिक शिक्षा जो स्वयं परमपिता परमात्मा ज्ञान सागर शिव बाबा इस धरा पर अवतरित हो ज्ञान अर्जन करा रहे हैं के द्वारा ही निवृत्ति मिल सकती

है। इस विद्या का अर्जन करने वाले ही अर्जुन हैं। और ये अर्जुन ही विकारों रूपी चक्रव्यूह की दीवारों को तोड़ देते हैं। मनुष्य जब परमपिता परमात्मा की आध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करता है तो सबसे पहले वह पवित्रता को अपनाता है। वह ब्रह्मचर्यव्रत को धारण करके पतन के गर्त में ले जाने वाली, नर्क के द्वार में धकेलने वाली काम विकार की दीवार को तोड़ देता है। अब वह स्वयं को आत्मा समझने लगता है तथा आत्मिक सुख की प्राप्ति से वह देहभान की दीवार को भी तोड़ देता है, जिससे देहभान से उत्पन्न मोह की दीवार भी टूट जाती है। अब परमपिता परमात्मा में मन लगने से जो आनंद प्राप्त होता है, उससे उसे संतोष प्राप्त होता है तो लोभ व स्वार्थ रूपी दीवार भी टूट जाती है। अब परमात्म याद में इच्छायें मन्द पड़ जाती हैं तो क्रोध रूपी दीवार भी कमज़ोर हो जाती है। मन प्रभु प्रशंसा में लग जाने से अपने मानशान अहंकार रूपी दीवार को भी गिरा देता है। इस प्रकार जीवन में व्यापक परिवर्तन होता है, अर्थात मानव इस चक्रव्यूह से बाहर हो जाता है।

अत: जो मनुष्य आध्यात्मिक शिक्षा अर्जन कर अर्जुन बन जाते हैं उनकी पहचान या निशानी यह है कि उसे इच्छा तो होगी ही, परन्तु आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा मन बुद्धि संस्कार की शुद्धि होने से इच्छाओं की भी शुद्धि हो जाती है। जैसे-जैसे आत्मा की अन्तर्निहित शक्तियों का उदय होता है और वह परमात्मा से युक्त होने के फलस्वरूप अपनी सर्वोच्च स्थिति की ओर बढ़ती है, वैसे-वैसे उसकी इच्छाएँ कम व शुद्ध होती जाती हैं। वे स्वार्थ परक न होकर जन कल्याण, परोपकार, परहित हो जाती हैं और वह मनुष्य आत्म उन्नति को पा लेता है। अत: हमारी शुभ इच्छा है कि हर मानव अर्जुन बन आध्यात्मिक ज्ञान का अर्जन करे और इन विकारों की दीवार तोड़ चक्रव्यूह से बाहर निकल आये।

लखनऊ-गोमती नगर(उ.प्र.)। सिटी मोनटेसरी स्कूल में 'थ्री डी हेल्थ केयर फॉर हेल्दी माइंड, हार्ट एंड बॉडी' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए मुख्य अतिथि स्वास्थ्य राज्यमंत्री सिद्धार्थ नाथ सिंह, हृदय रोग विशेषज्ञ ब्र.कु. डॉ. सतीश गुप्ता,माउण्ट आबू तथा अन्य।

कुशीनगर-उ.प्र.। ब्र.कु. मीरा को उनके समाज के प्रति उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित करते हुए बी.जे.पी. के क्षेत्रीय संगठन मंत्री शिव कुमार पाठक।

दिल्ली-पीतमपुरा। मुलाकात के दौरान एम.सी.डी. के ज्वाइंट एसेसर एवं कलेक्टर एच.के. हेम को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुनीता व ब्र.कु. कनिका।

दिल्ली-ईस्ट पटेल नगर। आध्यात्मिक झाँकी के उद्घाटन पश्चात् चित्र में इंडिया दर्पण न्यूज़ के चीफ एडीटर ललित सुमन, दिल्ली मार्बल मार्किट एसोसिएशन के प्रेज़ीडेन्ट वी.सुभाष, ब्र.कु. राजश्री, सिंडीकेट बैंक के जी.एम. वी.अशोकन, ज्योतिषी पंडित शास्त्री सुरेश पाण्डेय, दिलदार बेग तथा अन्य।

जालन्धर-ग्रीन पार्क। सेवाकेन्द्र में आने पर ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में डी.जी. एम.ओ. रणवीर सिंह, कर्नल मनमोहन सिंह, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. मीरा व अन्य।

शिकोहाबाद-उ.प्र.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् चित्र में फिरोजाबाद की डी.एम. नेहा शर्मा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. राजपाल, ब्र.कु. अश्विनी तथा ब्र.कु. उमेश।

बोकारो-झारखण्ड। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए स्टील प्लांट के सी.ई.ओ. पी.के. सिंह तथा उनकी धर्मपत्नी सितारा सिंह, ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. सुमन तथा अन्य।

जयपुर-सोडाला(राज.)। हैल्पिंग हैंड फाउंडेशन द्वारा आयोजित ईद मिलन समारोह में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. स्नेह। साथ हैं महासचिव नई मरब्बानी, जमात-ए-इस्लामी हिंद के मोहम्मद इकबाल सिद्दीकी, चेयरमैन वकार अहमद, सवाई सिंह तथा अन्य।

जालोर-राज.। कृषि विस्तार केन्द्र केशवना में आयोजित किसान सशक्तिकरण अभियान के कार्यक्रम में उपस्थित हैं ब्र.कु.रंजू, ब्र.कु. शशीकांत,माउण्ट आबू, ब्र.कु. सुमन्त,माउण्ट आबू। कृषि विज्ञान केन्द्र के सहायक निदेशक मनोहर जी व अन्य।

'चैतन्य देवियों की झाँकी' नारी के सशक्तिकरण में सराहनीय कदम - मुख्यमंत्री

भोपाल-म.प्र.। नवरात्रि के पावन पर्व पर शहर में ब्रह्माकुमारी संस्थान के द्वारा विभिन्न जगहों पर तथा मंदिर के प्रांगण में चैतन्य देवियों की झाँकी के पंडाल लगाये गये।

झाँकी के अवलोकन पश्चात् माननीय मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।

जिसमें से ब्रह्माकुमारी संस्थान के शाका रिवेरा टाउनशिप सेवाकेन्द्र द्वारा प्लैटिनम प्लाज़ा, माता मंदिर पर आयोजित भव्य एवं अद्भुत 'चैतन्य देवियों की झाँकी' कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती साधना सिंह चौहान ने शिरकत की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने संस्था को बधाई देते हुए कहा कि चैतन्य देवियों की झाँकी के माध्यम से समाज में नारी के उत्थान व सशक्तिकरण के लिए ब्रह्माकुमारीज़ सराहनी कार्य कर रही है। राजयोगिनी ब्र.कु. मंजू ने कहा कि नवरात्रि की यह झाँकियां भी इसीलिए सजाई जाती हैं, कि हर नर-नारी स्वयं के अंदर झाँक कर देख सके कि क्या मैं देवी माँ का बेटा या बेटी कहलाने योग्य कर्म कर रहा हूँ? यदि नहीं तो मुझे अपने जीवन को आध्यात्मिक मूल्यों के आधार से ऐसा बनाना होगा कि श्रेष्ठ कर्मों से श्रेष्ठ जीवन का निर्माण हो। ब्र.कु. तृष्णा ने बताया कि मनुष्य की सबसे बड़ी भूल यही है कि वह खुद को नाम रूप या फिर मिट्टी में मिल जाने वाला शरीर समझता है, जबकि वास्तव में हम यह शरीर नहीं बल्कि इस शरीर रूपी रथ का इस्तेमाल करने वाले रथी हैं, आत्मा हैं। सेंट्रल बैंक के वरिष्ठ मैनेजर सुनील सोंहिया ने इन कन्याओं की देवी रूप में आरती के पश्चात् कहा कि इस समय मुझे इन चैतन्य देवियों के माध्यम से परमात्मा अपना अनुभव करा रहे हैं। मैं स्वयं को ईश्वर के बहुत ही करीब महसूस कर रहा हूँ। मैं धन्य हो गया हूँ। निश्चित ही यह ईश्वरीय कार्य है, और सम्पूर्ण पवित्रता के कारण ही ऐसा अनुभव होना संभव हुआ है। कार्यक्रम में आये सभी जिज्ञासुओं ने नि:शुल्क सिखाये जाने वाले राजयोग कोर्स को करने का संकल्प भी लिया। प्रतिदिन झाँकी में गीतों के मध्यम से ईश्वरीय सन्देश दिया गया। सभी आगंतुक श्रद्धालू इन देवियों के दर्शन से भाव विभोर हुए।

राजयोग सुख शांति का पासवर्ड

देहरादून। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मुख्य शाखा सुभाष नगर के सभागार में संस्था की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित 'राजयोग द्वारा सुख-शान्ति' विषयक कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि राज्यपाल डॉ के.के.पाल ने कहा कि जिनके पास खुशी है, उनके पास सबकुछ है। खुशी मिलती है हमारे गुणों द्वारा। जिस व्यक्ति के अन्दर जितने अधिक दिव्य गुण होंगे उतना वह खुश रह सकता है, क्योंकि खुशी हमारे अन्दर छिपी हुई है। भारतीय संस्कृति सबसे पुरानी संस्कृति है। और संस्कृतियाँ आईं और विलुप्त हो गईं। भारतीय संस्कृति आज भी है और आगे भी रहेगी। हाँ इतना ज़रूर है कि नैतिक मूल्यों के पतन के कारण इस भारतीय संस्कृति के मनुष्य सुख-शान्ति की जगह दु:ख-अशान्ति की अनुभूति कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि कर्मों से ही मनुष्य का चरित्र बनता है। चरित्र निर्माण में ब्रह्माकुमारी संस्था का महत्वपूर्ण योगदान है। मैं ब्रह्माकुमारी संस्था के सुन्दर

कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राज्यपाल डॉ के.के. पाल। मंचासीन हैं ब्र.कु सुशील, ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. अमीरचन्द तथा ब्र.कु. मंजू ।

भविष्य की कामना करता हूँ। चण्डीगढ़ से आये राजयोगी ब्र. कु. अमीरचन्द ने संस्थान द्वारा 80वर्षों से चल रही ईश्वरीय सेवाओं से सभी को अवगत कराया और कहा कि लाखों लोगों ने इस ईश्वरीय शिक्षाओं के माध्यम से अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाया है और बना रहे हैं। राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी आशा दीदी ने कहा कि मनुष्य यह तो समझ चुका है कि चीज़ों में चिर-स्थाई मानसिक सुख नहीं है। मनुष्य अपने जीवन में सुख-शान्ति की चाहना रखता है। परन्तु उसे इसकी गहराई का बोध अथवा अनुभव नहीं है, क्योंकि सुख-शान्ति तो मनुष्य के अपने निजी ख. जाने हैं। आवश्यक्ता है राजयोग के अभ्यास द्वारा उनको सुजाग करने की। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा सिखाये जाने वाला योग सुख-शान्ति का पासवर्ड है।

स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मंजू दीदी ने सभी का आभार व्यक्त किया। मंच का संचालन ब्रह्माकुमार सुशील ने किया। इस अवसर पर शहर के गणमान्य लोग अमरनाथ गोंदवाल, जे.एस.रावत, सुरेन्द्र बिश्ठ, विजय रस्तोगी, राजकुमार जोशी, मनोज रावत, अनुप गुप्ता, हिमांशु आर्य, माला गुरूंग, बबीता चौधरी, संगीता वर्मा, मानसी गोसाई, रेनू रावत, बबीता भण्डारी, जसबीर कपूर, उषा कपूर, मुस्कान कपूर इत्यादि उपस्थित थे।

संयमित जीवन से ही कर सकते दूसरों को अनुशासित - शिवानी
अनुभवी हमेशा वृक्ष की शीतल छाया के समान - आशा

ओ.आर.सी.-गुरूग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा स्कूल, कॉलेज एवं विश्वविद्यालयों के शिक्षकों, प्राचार्यों एवं प्रशासकों के लिए 'क्रिएटिंग गुडनेस' विषय पर स्नेह मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका एवं जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी ने बताया कि शिक्षकों पर वास्तव में बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। एक शिक्षक ही देश के भविष्य को सही दिशा दे सकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों को भावनात्मक रूप से भी शक्तिशाली बनाने की ज़रूरत है। एक शक्तिशाली मन ही परिस्थितियों का सामना कर सकता है। उन्होंने आगे कहा कि अगर हम बच्चों को अनुशासित करना चाहते हैं, तो उसके लिए खुद में संयम बहुत ज़रूरी है।

शिक्षा जगत से जुड़े लोगों को अपने कल्याणकारी वचनों से लाभान्वित करते हुए राजयागिनी ब्र.कु. आशा दीदी तथा जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु. शिवानी।

हमें स्वयं पर विश्वास होना चाहिए। दूसरे हमारे बारे में जो कुछ भी कहते हैं वो उनका अपना नज़रिया है। हम अपने बारे में बेहतर जानते हैं। उन्होंने कहा कि हमें सदैव सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना है। हम अगर दूसरों की कमज़ोरियों का चिंतन करते हैं, तो कुछ समय बाद वो हमारे चित्त का हिस्सा बन जाती है। इसलिए हमें मूल्यों को सदैव प्रोत्साहित करना है। हम सिर्फ बच्चों को किताबी शिक्षा ही नहीं सिखाते बल्कि अपने आचरण से भी बहुत कुछ सिखाते हैं।

ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र. कु. आशा दीदी ने अपने सम्बोधन में कहा कि श्रेष्ठ जीवन बनाने के लिए श्रेष्ठ विचार ज़रूरी है। वर्तमान समय सम्बन्धों में कटुता का मूल कारण अहंकार है। अंहकार के कारण लोग एक-दूसरे के आगे झुकने को तैयार नहीं हैं। जीवन में अगर सुख एवं शान्ति से रहना है तो हमें दूसरों की दुआएं लेना बहुत ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि अपने बुज़ुर्गों का सम्मान करना हमारे देश की महान परम्परा रही है। बुज़ुर्ग या अनुभवी व्यक्ति उस छायादार वृक्ष के समान हैं, जिससे निरन्तर शीतल छाया प्राप्त होती है।

भिवानी से आए डॉ रूप सिंह ने कहा कि खुशनुमा जीवन बनाने के लिए हमें अपने दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि खुश रहने से लाईलाज बीमारियां भी ठीक हो जाती हैं। हमारा जीवन एक संगीत है, इसमें हम जैसी थाप देंगे, वैसी ही धुन बजेगी। उन्होंने कहा कि योग ही वास्तव में मुख्य पद्धति है, बाकी सब तो वैकल्पिक पद्धतियां हैं।

ब्र.कु. ख्याति ने सभी को संस्था का परिचय देते हुए कार्यक्रम के उद्देश्य को स्पष्ट किया। ब्र.कु. विधार्ती ने एक्टिविटीज़ द्वारा आपसी सम्बन्धों का महत्व समझाया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. दिव्या ने किया। सभी को राजयोग की भी अनुभूति कराई गई। कार्यक्रम में 400 से भी अधिक शिक्षा जगत की विशेष हस्तियों ने शिरकत की।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 13th Oct 2017
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं आशीर्वाद प्रेस नोएडा द्वारा मुद्रित।